

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ३२०
घ

Title रत्नावली

Author ईशदेवः

Extent १७ पन्ना Age _____

Subject नाटक

रत्नावली

३२०

१७ फरवरी

ने २२०५
रत्ना चली
१० फरमा
महिष

श्रीगणेशाय नमः
७१

का. वला ७ अक्षि ३२०

उतः

श्रीगणेशाय नमः ॥ पादाग्रस्थितपादुके लनभरेण नीतपादमस्तु शंभोः सस्पृहो च नैत्रयपयथा
त्वात्तराधने ॥ हीमत्याशिरसाहिरोः सपुनः स्वदेहमोक्षपया विभिनष्यन्तु सुमानलिभिर्निजयाशि
घो नरे पातु वः ॥ १॥ अपि च ॥ श्रीसुभवे नमस्तथा सह नु वा व्यावर्तमाना हि या नैस्ते वं धुवधूजनस्य वचने नो
नामिमुख्यं पुनः ॥ दृष्ट्वा जेवुरमानं साधुसरसा देवी नये संगमे संरो ह्युल्लेखः हरेण हसतो भिन्नप्राशियापा
स्तु वः ॥ २॥ अपि च ॥ को ये ह्ये हि विपाते स्थि मिरुपशमिता बहू ये मिः प्रयेमी जाला तो कृत्स्नो धर्म्यपन्नग
एह नो ह्यनीषय घः पने नि ॥ दक्षसौ त्यस्य पत्नी विनयपतिरुपलब्ध विदुषां पि देवैः शंसन्ति त्या तहा सोमव
मधनाये घोपातु दे ये शिवो नः ॥ ३॥ किं च ॥ जिते सुदुपतिना नमः सुरेभ्यो हि जरेषु भा निरुपद्रवा भवेतु ॥ ननु आशीषं
तु च पृथिवी सम्यङ् सस्या प्रतपतु च इव पुनरे इ चै ॥ ४॥ नो घंते स्त न धारः ॥ अलमति प्रसंगे नो ॥ अथा हवसे तो
सवे सवहुमानमाहूय नानादिधे शागते नराः श्रीहर्षदेवस्य पादौ पजीविनाराजसम्पदो नो क्तैः पथा
स्मत्या मिना श्रीहर्षदेवेना पूर्वयस्करेण नालं कृता रत्ना ये लो नाम नादि कुरुते त्यस्माभिः श्रीने परंपरया
श्रुता ननु प्रयोगो दृष्टा तस्यै वराः सकलजने न हृदयो द्वादि नो बहुमानादस्ता सुवानु गे ह्युध्याय पावे प्र
योगे न त्वयान दधितव्यो न ॥ परि क्रम्या बलोक्य च ॥ पावन्ते पथ्य रचना कृत्या यथा नि लि धर्त संपादया मि पार
षट्म बलोक्य ॥ अवेद्या वर्जितानि सकलं समा माज्जिका मां मनां सीति ने निमृष्य पतः ॥ श्रीहर्षो निपुणः कविः पार
षट्पे पागुण गृहिणी लोके सारिच ये सारा जे चरितं नाद्ये वं शा वयं ॥ वस्त्वै के क म पी ह वां धित फल प्राप्तेः पद कि पुनः

अनेन तस्या
नीवचातुरी
शासितं व
इति चेति

मद्राग्योपचयाद्वसन्मुदिनः सर्वगुणानां गणः ॥ तद्यावदहं गृहं गत्वा गृहणीनाह्यसंतीतकमनुतिष्ठामि ॥
 रिक्तम्यनेपथ्यामिमुखमवलोक्य ॥ इदमस्मदीयं गृहं कावत्प्रविशामि ॥ उच्चैः ॥ आर्ये इनेस्तवत्प्रविश्य नदी ॥ श्री
 ज्ञोत इत्येन्द्रि ॥ आणवेदुः ॥ श्रीजोकोरि ॥ श्रीगुणविष्टी ॥ श्रीदुति ॥ सूत्र ॥ आर्ये रत्नोवलीदर्शनोऽनुकोप्य
 जलोकः ॥ तद्देह्यतो नेपथ्यं ॥ नदी ॥ निश्चस्य ॥ सोद्वेगं ॥ श्रीजोकोरि ॥ श्रीदुति ॥ श्रीसंसारसिद्धिं ॥ महं
 दभा ॥ श्रीएउणरेक ॥ जेद्यदुहिदा ॥ सावितु एकस्मिन् विदेसे तरेदिणा ॥ कहं एवं दूरदेसठि देणजामा दुण
 सहसेपाणिगगद्गुणमविस्तरि ॥ इमा एवमेता ए अप्पा विमेषदिभादि ॥ किं उल्लेख्यिदं ॥ सूत्र ॥ आ
 र्ये दूरस्थनेत्यलमुद्देगेन ॥ ॥ मतः ॥ दीपादन्यस्मा ॥ दधिमध्यादपि जले निधेदिशोप्यतात् ॥ आनीप
 स्मृतिमिधयति विधिरभिमतमभिमुखीकृतः ॥ ॥ नेपथ्ये ॥ साधुभरतपुत्रसाधु ॥ एवमेतत् ॥ कः सं
 देहः ॥ दीपादिति पठति ॥ सूत्र ॥ आकर्य ॥ नेपथ्यामिमुखमवलोक्य ॥ आर्यो किमतः परं विलेखते ॥ नव
 पमेमपवीपान्नाता गृहीतं पौगंधरायण भूमिकः प्राप्त एव ॥ तदेहिनेपथ्यगृहणाय सज्जीभवति
 निष्क्रान्तो प्रस्तावना ॥ ततः पौगंधरायण ॥ पौगं ॥ एवमेतत् ॥ कः संदेहः ॥ दीपादिति पुनः पठित्वा ॥ अथ
 पाकसिद्धादेशप्रत्ययप्रार्थितायाः सिंहले अरुदुहितुः ॥ अतः समुद्रप्रवरुण भगनिमग्नायाः फलका
 सादनं कः कवको शांवीयेन वणिक्सासिंहलेभ्यः प्रत्यो गच्छता तदवस्थायाः संजायते नलोमा लोनिह
 याश्चैतानपने सर्वथा स्पृशंति स्वामि नमभ्युदयाः ॥ निजं स ॥ मयापि वेतां देवी हस्ते स गौरय निक्षिप
 ता युक्तमनेनानुष्ठितं ॥ कृतं वमया वा भव्योपिकं कुकी वसुभूति नासह सिंहले अरामायेन कथं

कथमपि स मुञ्चदुतीर्य को सत्वे शोषितये गतवता रुम एव ता मिलित इति ॥ तदेवं निष्पन्न प्रापमपि प्रयोजनं न
 मे भूतिमाहृतीति कथं यस्व नुभूत्यभावः ॥ यतः ॥ प्रारंभे स्मिन्स्वामिनी शङ्क हेतो देवेनेत्येदं तह स्तावले
 वे ॥ सिद्धे वातिनास्ति सत्यं तथापि स्वेच्छा चारी भीत एवास्मि भर्तुः ॥ ७ ॥ न पथ्य कलकलः ॥ योगे धरा धरा ॥ आ
 कर्ण्य ॥ अये यथा धर्मानि हन्यमाना नृदुमुदं गनु गतसंगीतमधुरः पुरः पौराणा मुञ्चराति वर्यरितधुनिः ॥
 तथातर्क्यानि नृदनामही पोसपुरजुन नृमादम वलौकरतु प्रसादा निमुखप्रस्थितो देव इति ॥ उर्ध्वमिव लो
 क्य ॥ अये कथमवरुह एव देवः प्रसादः ॥ पण्यः ॥ विश्रान्तिविग्रह के चोरतिमाने नृनस्पृचिते वसुनृप्रिय
 वसंतक एव साक्षरः ॥ पर्युत्सवो निजमहोत्सवदर्शनाय नृनृश्वरः कुसुमचाप इवाभ्युपेति ॥ ८ ॥ तयो वरु
 हंगत्या कार्यशेषं चिंतयामि नि निष्कृतः ॥ विष्णुभक्तः ॥ ततः प्राविशत्साक्ष नृनृस्यो गृहीत वसंतोत्सवे पौराजा ॥ व
 संतकश्च ॥ राजा ॥ सादरः ॥ सखे वसंतक ॥ वसंतकः ॥ आणवे दुभ वेशराजा ॥ राजा निजितरात्रे योपि सचिवे
 नृसुतः समस्तोभरः सम्यक्यालुन नाविनाः प्रशमिताः शोषोपसर्गप्रजाः ॥ प्रद्योतस्य सुता वसंतसमपस्थिते
 तिनाम्नां धृतिं कामः काममुपेक्षयंममनुर्मन्ये मदानुत्सवः ॥ ९ ॥ विदुः ॥ सहर्षी ॥ भो वरुत्सव एव लेदी ॥ अ
 हे उल्लासामि एतन्मयदोण कम देवस्सममने च एव स्म वभाणस्स अ-अम-अणम इत्युज्ज्वलापि अ-अ
 स्स एतु वनिमंती आदि ॥ विनोक्तः ॥ ताकि इमिणा पेरव दाव इमस्समहुम त्रकामिणी जेण स-अगह गहिद
 सिंगकत्त ॥ जण्य हारण अंतणा अरजेण नृसिद्ध कोदह नस्स समेन दो सुधुतमद लोदा न वर्यरी सद्धमुहरे
 त्यामुह सोहिणा पइसापड वा सपुंजापिं जेदिजो तदसोदितामुहस्ससिद्धि अम-अणमस्स वस्स ॥ राजा ॥ मह
 र्षी ॥ समेनादवलोच्य ॥ अहा पराकेटिमधिरोहति प्रमोदः पुरः पौराणा ॥ तथाहि ॥ कीर्त्तयितुं तको धैः रुतदिवस

त्वमिति गण्य
 तेश्वरो के

कुट्टिमोलीनि
वद्वान्

सप्तमार्थकुटीरि

मुखैः कुंकुमशोभैः हेनालंकारमाभिर्भरितमिश्रितशिरैः शोभैः ॥ किंकिरते ॥ एषावेवाभितक्ष्यस्वविभवविजि
 ताशोभावनेशकोशाकोशावीशतकुम्भस्ववचिनजनेवैकपीताभिमानि ॥ १० ॥ अपिब ॥ योरायं त्रयिभुक्तं सततपयः (रमकृता)
 पूरल्लुते सर्वतः सद्यः सोऽयिमर्दं कर्दमकृतकीडाक्षमे प्रांगणे ॥ उद्गमप्रमदाकपोलनिपुतरोसिद्दुरागाहणेः
 दसिगकजलतप्यहारमुक्तेसिक्कारमणहंवारविनासिलीजलविलसिदं आलो एदुपि अवप्रस्ता ॥ राजा ॥ वि
 लोका ॥ वयस्य सन्मयकृष्टलया ॥ कुतः ॥ अस्मिन् प्रकीर्णपटवासकृतांधकरे दृष्टो मनामलिविह्वलरश्मि
 जालैः ॥ पानालमुद्यतफलरुतिशृंगकोयमा मघसंस्तरयनीवभुजैर्गलोकः ॥ १२ ॥ विदूषकः ॥ विलोक्य ॥ भो अ भुजंगोति
 स्तपे क्वपे क्व ॥ एसाखुम अणि आम अवसविसे वदतामि एय एयंती अदने ॥ आरे सहदो जेव आअथ विजा सिने
 हिति ॥ अवलो एद एदपि अव अव प्रस्ता ॥ नतः प्रविशतो मदनैः लीला नाटयं त्यौ द्वि यदी खंडं गायं त्यौ नेचौ ॥ म
 दनिकागायति ॥ कुसुमा उहपि अ अहं अ अ म उ ली किद्वदु अ उ ॥ सिद्धि लि अमा एगा हाण अ वापि अद
 हि एय वण अ ॥ ११ ॥ वि अ सि अ व उ लो लो अ अ उ कं ठि अ पि अ मे ल अ ॥ पडि काले ए अ स मथे अ त म द उ व
 सथ अ ॥ १२ ॥ इह पठम महुमा सो ॥ जगत्सहि अ आ इ मु उ कु ल इ म उ आ इ ॥ पञ्चायि इ कामो लो दु प स रे हिं कु
 सुम वालो हिं ॥ १३ ॥ राजा ॥ निर्वण्य ॥ अहं न धुरो यमा सो नि भंरः ॥ की डारसः ॥ तथा हि ॥ स्वस्तः स्वदु मशोभां त्यजति विर
 चितामाकुलः केशपाशः क्षीवापानपुत्रौ बद्धिगुणतरनिमो अ दतः पादलग्नौ ॥ अलः कं पालुवं चो दन वरत मुने
 हनिहारे यमस्याः की डं त्याः पी डये वस्तन भ रवि नम न्मध्य भगाने प ॥ १३ ॥ विदू ॥ भो व अ स्त अ ह पि ए द ल व
 द्धपरि अ एणं म गे ए यं तो म अ ए म ह स वं मा ए इ स्त ॥ राजा ॥ वयस्य एव क्रियतां ॥ विदूषकः ॥ जं मे व आ ए वे दि नि ॥

सुविदग्ध

भुजंगोति

राम
२

उत्थाय वेद्योर्मये न्यति ॥ मोदिम अलि ए मोदि च दल इ ए म म वि ए दु न च रिं शि क वा वे हि ॥ म द नि का च द न दि
 के ॥ ह द स रा ए सा भो दि च द्यारी ॥ वि दू ॥ स ह र्व ॥ किं ए दि ए रा खे डे ए मो अ आ क शी यं नि ॥ मे द ॥ वि ह स्य ॥ ने हि र
 प ठी आ दि खु ए द ॥ वि दू ॥ स वि स्म य ॥ प ठी आ दि खु ए द ॥ स वि षा द ॥ ज इ प ठी आ दि ना अ ने ए दि ए ॥ वे री प अ वे अ
 स स स्त जे व स आ स ग मि स्त ॥ न वा करो ति ॥ अ प स्त यो प वि श नि ॥ उ मे आ क र्प न ॥ वि दू ॥ आ क र्प य ति ॥ म द नि का ॥ उ मे
 ह द स क हि ग ष सि ॥ इ ह ज हा की ले म् ॥ वि दू ॥ अ पा क ष्य ॥ इ ति प्र प लो य रा ज्ञा न मु प स्त य न प स्त ए षि दो मि ॥
 ए हि र ॥ की लि प प लो यि दो मि ॥ अ ने न ति का ॥ अ ज म अ ए र ए नि र ए अ मे हि की लि द ॥ न ए र ए वे दे म् ॥
 ह व भो दि ए ली ए स दे स म हा रा अ स्त ॥ म द ॥ ए ह तु वे रे म् ॥ प रि क म्यो प स्त य च ॥ उ मे जे दु र भ द्वा भ द्वा दे वी आ ए वे
 दि द्यु ह्ने त्ते ह्ने म् ॥ ना ट य त्यो ॥ ए हि र वि षा वे दि ॥ रा ज्ञा ॥ स ह र्व ॥ वि ह स्य ॥ सा र ॥ म द नि के न न्या सा प य ती त्ये
 म ली य ॥ वि शो ष तो ध म द न म हो स वे ॥ न दु य नो कि मा रो प य ति दे वी ॥ वि दू ॥ अ द सी ए पी र कि दे वी आ ए
 वे दि ॥ वे द्यो ॥ भ द्वा सी ए व वि षा वे दि ॥ ज हा खु अ ज म ए म अ रे दु ज्ञा ए म दु अ त्तो सो अ स ॥ द स्म भ अ व द कु
 मा उ स्स ए आ लि च नि द वा ॥ त त्य अ ज उ त्रे ए स सि हि द ए हो द द ति ॥ रा ज्ञा ॥ व य स्य किं वे र्क य मु स वा दु स वा
 न र मा प ति त मि ति ॥ वि दू ॥ ना उ त्ये हि त हि ए व ग ष म् ॥ जे ए न ते हि ग द स्त न म वि व म् ॥ ए स सो त्यि वा य ए किं पि भ वि
 स्त दि त्ति ॥ रा ज्ञा ॥ म द नि के ग म्य तो द्ये नि वे द धि नु ॥ नो प म ह मा ग त ए व म को क रं दो धा न मि ति ॥ वे द्यो ॥ न भ द्वा आ ए
 वे दि त्ति नि क्रा ते ॥ रा ज्ञा ॥ व य स्य आ दे श य म क रं दो धा न स्य मा ग ॥ वि दू ॥ ए दु भ द्वा ॥ प रि क म त ॥ वि दू ॥ अ ग्नो प लो
 लो क्य ॥ भो ए दं तं म अ रे दु ज्ञा ए ता ए हि प वि स्त म् ॥ इ ति य वि श न ॥ वि दू ॥ स वि स्म य ॥ मो न हा रा अ वे र वा ॥ ए द न
 म ने अ मा रु द दो लि अ म ड न न सो ह आ र म जे रे ए प ड ने प डि व ड प ड वि आ ए मि त म ड अ रे मु क शी री म लि
 म ड र को र लो लो व से गी द रु ता वे द नु हो ग म रा द मि अ अ रे वि अ म अ रे दु ज्ञा ए ने र यी प दि ना प वि ह स दु भ व ॥ रा ज्ञा ॥

3

विभक्त
रूपः

समेतदावलोक्य अहो रम्यतामकरं दोषानस्य ॥ इह ॥ उद्योतुमकांतिभिः किसलयैस्साम्प्रति विभ्रतो भ्रंगो
 निविहतेः कलैरविशदया हारलो नो नृतनः ॥ धूलतोमलयाजिता ॥ हतिचले शारवासमूहे मुहर्भति प्राप्यम
 धुप्रसंगमधुनामतादनामोदुमा ॥ ॥ अपि च ॥ मले गेदुप्रसूका सवद्वक्त्रकले वास्यते पुष्करव्यामधना
 नितरुणामुखशशिनिचिराञ्चपका न्यधभाति ॥ आकण्णशोकपादाहतिपुचरसितेनिर्भरेन्दुपुण्ड्रका
 कारस्यानुमीतेरनुकरणमिवारभ्यते भ्रगसार्थः ॥ ५५ ॥ विदू ॥ आकर्ण्य ॥ भोव अस्स एण एदे महु अरो ॥ एउस
 है अणुहरति ॥ एउरसहा जेव एस्सो देवी एपरि अणस्स ॥ राजा ॥ वपस्स सम्यगवधारिते ॥ तते ॥ प्रविशति वस
 वेदत्राकोचनमाला ॥ सागरिका विभे वनञ्चपरिवार ॥ वास ॥ हे से के वनमाले आदस्ताह म अरं दुहाण सम
 गं ॥ कंच ॥ एदुर भदिणी परिक्रम्य ॥ वास वेदत्रा ॥ हे से के वनमाले अथा केति अदरे दाणि सोरभा सो अपा अ
 वो हहि म एभ अवा देम अणस्स ए अणि वने इद्वो ॥ कोचनमाला ॥ भदिणि आसेसो जेव के सवेक वदि भो
 णी ॥ इ अणुसाणिरंत रुभिण कुसुमसोहिणी भदिणी एपरि गहि दामा हवी नदा ॥ एसा खु अवराणो मालि स्वायतीक
 आनदा ॥ जो ए अ आ न कुसुमसमुगमस छु लुई ए भदिणी ए अणुदिणो अ आसी अदि अण्णा ॥ तो एद ॥ अ ता
 दिक्षमि अदी सदा एव सोता सो अपा अयो ॥ इह देवी अणि वने इस्सदि ॥ वास ॥ ता एहि नहि जेव नहु गच्छे ॥
 काये ॥ एदुर भदिणी ॥ सर्वा परिक्रमेति ॥ वास ॥ अ अ सोता अपा अयो ॥ जेहि अ हं स अणि वने इस्स ॥ ता एहि मे
 ए अणि मित्रा इ उव अरण इ उव एहि ॥ साग ॥ उपसत्य ॥ भदिणि एदं सव सज्जे ॥ वास ॥ निरुप्यते गने ॥ अ होपमा
 दोपरि अणस्स इस्स एव देस एण अने एर किं व अदि ॥ तस्स जेव दिदि गो अरं पडिदा भवे ॥ भोदु एदं दावा प्रकाशं ॥
 हे जे सोरि एकी सवुये अक्रम अणम ह सवपरहि एसा अरि अ ठसि अइ हागदा ॥ तो नहि जेव नहु गच्छे एदपि सबे
 ओप अरण के वनमाला एह ल्ये समप्यहि ॥ साग ॥ इ भदिणी आण वेदि नियासेल्यो ॥ कति सदानि गत्या ॥ अस्म गने ॥

राम
३

दृष्टमनसि विचारितं

सा अरि आस एउल सुसंग दार हस्ये समपिदा ॥ एरं पि अस्थि मे पे किय दुं को ह हलने ॥ किं जहा नादस्स अ
 ते उरे भ अवं अणं के अथी आदि ॥ इह वित ह जे धु के वा अल हे तिता अल के व अ न वि अ पे किय स्स ॥ आव
 इह र आ सम अ हो दिता व अ पि न अ च ते प ॥ उ स ए व र इ दु कु सु मा इ अ व नि एि स्स ॥ अ व र परि क म्पा
 व नो क्य च ॥ इति कु सु मा प च ये ना ट प ति ॥ वा स ॥ क च ए ग मा ले पा ड टा वे हि अ सो अ म् ल मे भ अ व ते प ॥ अ स
 व ॥ को च सो ॥ जे भो दृ ली आ ए वे दि त्ति ने पा क से ति ॥ वि दू ॥ परि क म्पा व नो क्य च ॥ भो व अ स्स ज पा वी से
 तो ले उर स हो ॥ तथा त क्क मि अ आ दा दे वी अ सो अ म् ल ने ति ॥ रं ज्ञा ॥ व य स्य स म्प ग व धा रि तं ॥ प श्य ॥ इ यं दे वी या
 कि जे पा ॥ ॥ कु सु म सु कु मार म् र्ति र्द ध नी नि य मे न त नु त रं म ध्ये ॥ आ भा ति म क र के तो ॥ पार्श्व स्था चो प या वि रि
 वा ॥ १५ ॥ त दे ह्य प स पो वे ॥ रा ज्ञा ॥ उ प स्य त्रि ये वा स व द ते ॥ वा स ॥ वि नो क्य क यं अ ज्ञ उ तो ॥ त य ज य अ ज्ञ
 उ तो अ लं क रं मं दे सं आ स ए प डि गा हे रा ॥ ए द आ स एं ए त्थ उ व वि स दु अ ज्ञ उ तो ॥ रा ज्ञा ॥ ना ह्ये नो प वि श
 ति ॥ क च ॥ भो दृ ली स ह स्य दि तो इं कु सु म कुं कु म चं द न त्या स ए हिं सो हि रं क दु अ र त्त सो अ पा अ वं अ र्चि भ अ
 व प ॥ उ तो ॥ वा स ॥ उ व लो ह मे ए वी व श्र र ता इ ॥ क च ॥ उ पे न प ति ॥ वा स ॥ तथा क र ति ॥ रा ज्ञा ॥ प्रि य ॥ अ स्य ग म अ
 न वि शेष वि वि क्त को ति ॥ को सु भ र ग ह चि र स्फु रं कु का तो ॥ वि भ्रा ज से म क र के त न म र्च यं ती वा ल न प्र वा ल वि ट थि
 प्र भ वा ल ने वा ॥ १७ ॥ अपि चो स्य ए त्थ ये ष दा ध ने स्म र रा ज्ञा ए ते न ह स्ते ह स्ते न ॥ उ डि नो प र म्प दु त र कि ल ने प इ
 व ल न्ध प ते शो क ॥ १८ ॥ क च न ॥ भो दृ ली अ धि दो भ अ व पे ॥ उ तो ॥ तो क रे हि ने र्म लो उ रं द ए अ स क र ॥ वा स ॥ ते ए रा
 उ य या हि मे कु सु मा इ वि लो न ए च ॥ को वा ॥ भो दृ ली ए द स वं स ॥ वा स ॥ ना ह्ये न रा ज्ञा ने ए ज प मि ॥ सो ग ॥ ग री न कु स मे
 हा ह्मि ॥ क कु कु सु मे ॥ नो हा रि व त्ति ह अ अ ए आ दि चि र म र क दं ॥ ना श मि ए सि दु वा र वि ड ने ए अ वा रि य स री त
 अ वि अ पे र या मि ॥ वि नो क्य ॥ क ह पे रि व दे जे व अ पु री कु सु मा उ हो अ म् ल एं ना द स्स अ व त उ रे चि भ ग र अ वी आ दि

४

इत्येवमखिलशरीरं आदि॥ ता अहोपदमोहं कुसुमोहं इह हि दृष्टेव भवतं कुसुमा उहं ह अहस्सं॥ इति कुसु
 मानिप्रक्षिपति॥ नमो देवभवं कुसुमा उहं॥ सुभदं सेलो मे भविस्ससि॥ दिष्टं उहं॥ अमोहं दसलो मे भविस्स
 सि इति प्रणमति॥ अहोपदमोहं विपुलो वे किवदो॥ ता जीवण के विमपे किवदि॥ ता वेहं गमिसं॥ इ
 ति निष्प्रामति॥ के यो॥ अहो वसेत अहो संपदं तु मे पिसो रिपया अहो पडिष्ठा हि॥ विदु॥ उपसर्पति॥ वास॥ वि
 लेपनं कुसुमा भरणं दानपूर्वकं अहो एदे सो स्थिवा अहो इत्यर्पयति॥ विदु॥ हवंग्ग हा हा॥ सो स्थिवा इह॥ नेप
 थ्ये वेतालिकः पठति॥ ॥ अस्मापास्त समे लो भासि न भसः पारंप्रपातेरया वास्या नी समये समे न्यपजनः सापंत
 ने सपतन॥ संप्रत्येष सरा रुह धुतिमुषः पादास्तवा से वितुं श्रीत्युक्त्वा रुतो दशा मुदय नस्ये दारि बो द क्षमा॥ २॥
 साग॥ परिहृत्य राजा नंदं दृष्ट्वा सस्फुटं॥ कहं अहं सो स अहं अहं सो॥ इह अहं ता देवादि सा॥ स हर्षं॥ करि सि
 द्धि मे सरीरं एदस्स दस्स ए लो दाणि वहुमदं सुवृत्तं॥ राजा॥ कथं सुत्तं वा यदु ते चेतो मे॥ से च्या नि के मो प्य स्मा
 मिर्जे पले क्षिते॥ देवि पश्य॥ उदय नंदं॥ तारि ते मिय प्राची स्त य पतिदि डि शो नाथे॥ परिपोडु ना मुखे न प्रिय मि
 वह दय स्थितं रमणी॥ २॥ देवित दुन्निष्ठा वे॥ आवासा भ्यं ते रमे व प्रविशा वः॥ सर्व उस्था पे रि क्रामंति॥ साग
 कथं पथिदा देवी॥ भो दुतुरि अगमस्स॥ राजा ने सस्फुटं दृष्ट्वा निश्चिन्त्य॥ कथं मे दमा इली एम ए वे रि वदं विवि
 रेण पाविदि॥ इति निष्क्रान्ताः॥ राजा परि क्रामन्॥ देविले मुखे पंकजे न शशिनः शो नाति रस्कारिणा पश्या भ्रुनि
 विनिर्जिता नि स हसा गच्छंति विष्णु यता॥ अक्या ते पुरि यो रवार व मि तो गी ता नि भंगो ग ना नी यं ते मुकु लो ते र पुश
 न के॥ संजात लभा इव॥ ३॥ इति निष्क्रान्ताः सर्वे प्रथमो क॥ ॥ नतः प्रविशति सा रि का पंजर व्यग्र हसा सं
 सगता॥ सुते॥ हृदि अहं कोहं दारि मम हृये इम सा रि अनिरि व वि अगद मे पि अ स ही सा अ रि आ भविस्स
 दि॥ अहं यतो दृष्टु॥ एसा खुणि उलि आ इहं देव्ये आ अहं दि॥ ता जीव ए दे पुष्प स्त॥ न ते प्रविशति निपुणिका॥

राम
४

विष्णु

उ अल्लो सुमर भद्रलो वृत्ततो ॥ नाजावगदु अर्भद्रलो एलि वे देमि ॥ इतिपरि कम्प ॥ सुसं ॥ हलालिउलि
 एकहि दालि तुमवि स्तिय खिख तहि अ-आवि अइ हृदि मे अवहारि अकु दो अदि क मसि ॥ निपु ॥ कथं
 सुसंगद ॥ हलो सुसंगद सु दु तु ए जा एदं ॥ एदं खुवि ल अस्स कारेण ॥ अज्ज किल म द्वा सि रिप बु दा दो आ
 अदस्स सि रि खंड दा स एणं म हे मस्स धमि अस्स स आसा दो अ-आ कु सुम सं व एण दा ह अं सि रि ख अ-अ
 ते ॥ एण पडि गा हि द लो ना लि अ-कु सुम स मि डि सो दि अ-करि स्स दि त त हि ए द उ ते ते दे वी ए अण सि दु पे
 सि दो स्सि ॥ तुम उ ए के हि प स्सि दा ॥ सुसं ॥ वि असा ह सा अरि अ-अण सि दु ॥ निपु ॥ दि ह म ए सा अरि आ ॥ ग
 हि द स मु गा अचि त्त फ ले अथा ह आ क अ-ली ग्घे र प विस ती तो ग घ दु पि अ स ही ॥ अ ह पि दे वी स आ स ग मि
 संने ॥ ॥ इति निष्कृते ॥ अ वे श क ॥ ॥ तत अवि श न्ति ग री त चि प न को म द ना व स म ना ट पे ती सा ग रि का ॥ सा ग ॥
 ह अ-अ प सो द र किं द मि ला आ स मे त्त फ ले ए दु ए न्ने ज ए प्प थ एण ए वे चे सा ॥ अ सं चो जे ए ए व दि ह ए दे दी द सो स
 तो जो व द्दि पु ए न्ति त जे थ पे थ ए व दु अ ह न स सि ॥ ति म हे द न्ने उ दा आ द रि स्स स ज म्म दो प ह दि स ह सं घ दि
 अ इ म्म ज ए प रि थि अ रा व ए म न्ने द स ए प रि थि द ज ए अ ए ग पं तो ए ले ज्ज सि ॥ अ ह वा को ह्म द सो अ ए ग स ह
 प ड ए मी दे ए तु ए ए व अ ज्ज व र सि द ॥ नो दु दा व ॥ अ ए ग दा व उ वा न हि स्स ॥ सा ॥ ॥ अ भ वे कु मा उ हा रि जि द
 सु रा ए सु रो भ वि अ इ थि आ जा ए प ह रं तो क थं ए न्ने ज्ज सि ॥ अ ह वा अ ए न्ने सि ॥ स थ पा म म न्ने द ना इ लो ए इ मि ए अं ग मि त्त द
 दु लि मि ते ए उ व स म र ए उ व हि द ॥ फ न क म व लो क्य ॥ ना जा व ग को वि इ ह आ अ छ दि दा व आ ले ए व स म ॥ ना व वा न
 पि दं पि त्ते अ मि म द ज ए प रि थि अ ज्ज ह स मी हि दं क रि स्स ॥ सा व थ म न्ने क म नो भ र्त्ता ॥ ना द्दो न फ लं क र ही त्यो ॥ सि इ थ थं ति
 नि स्ये ॥ अ इ थि अ दि स इ से ए वे व दि ने अ ग्रा ह्म ता न ह वि त स्स ज ए स्स अ ए न्ने द से लो वा अ ए थि मि ता ज ह रं
 त ह आ लि अ प रि थि स्स ॥ ना द्दो न लि ख ति ॥ त अ वि श न्ति सु स ग ता ॥ सुसं ॥ ए दं र वु द ली ह रं तो जा व प वि सा मि ॥

सतोषं

५ आक्षेपात्कारः

4

प्रविश्यावलोचय॥ सविस्मयं॥ किं उण एसा गुरु आणु रा अरिख नहि॥ अ-आ लिहं तो ए मं पररविदि॥ भो दुना
वधावदिहुव हं सेपरिहरि अणिरुवइस्सं॥ स्वरं पृष्ठ तो स्या स्थि ला॥ दृष्टो स हं॥ कहं भदु आलिहिदे॥ सा हुता
अरि एसा ह॥ अहं वा॥ लोकमना अरं वज्जि अरा अहं सी अलासिं अहरि नदि॥ सा ग॥ सवाय्य॥ आलिहिदेन
ए एसा किं उण एणिव डंन वाह सल्लि न एमि दिहु पेरिव दुं स प ह वदि॥ उध्वं म अणि सहरं ती सुसग नां दृष्टु उतरी मुखं कृ
येण फलं न क प्रष्टा दयेनी॥ वि लो क्यस्मि तं कृत्यो॥ कहं सु स ग द॥ सहि सु स गे इ इ दो उ व विस॥ सु स॥ उ प वि श्य॥ क
ले कं गृहीत्वा॥ दृष्ट्वा च॥ सहि को ए सो नु ए आलिहि दे॥ सा ग॥ प उ तं मे हो स बो भ प्र वं अणे गो॥ सु स॥ स स्मि ते॥
अ हो दो ए उ द तं ए किं उ ए सु उ ल वि अ चि तं प डि भो द॥ ना अ हं पि आलिहि अ र इ स ग हं क रि स्स॥ व र्त्ति क र
ही लो नो द्यु तं लिखति॥ सा ग॥ वि लो क्य स्स को ध॥ सु स गे दे कि स नु ए अ हं ए य आलिहि द॥ सु स॥ वि ह स्य॥ सहि
किं अ-आ रणे कुप्प सि॥ जो दि सो नु ए काम दे वो आलिहि दे तो दि स्सि म ए र इ आलिहि दे तितो अ स हं स भा वि णि किं
ए दि ए आ ल वि दे ए॥ कहं हि स बु बु तं तं॥ सा ग॥ स लं जी॥ ए जो णि दं सि पि अ ल ही ए॥ प्र का शो धि म सा ह म ह
दो र व मे न ज्ञा ता न हं करे सु ने हा ए को वि अ व शे ए दं बु तं तं अ णि स्स दि नि॥ सु स॥ न हं करे मि आ ल व स्स॥ ए दा ए
उ ण मे धा वि णी ए सा अ रि आ ए ए स्य का रणे न हो द व॥ क द वि ए सा इ म स्स ग ह द थो क स्स वि पु र दो मं न इ स्स दि नि
सा ग॥ सहि अ दे वि मे अ चि अ द रं से द वो व ह्ति दि नि॥ स र ना व थ्या ना ट य नि॥ सु स॥ सा ग रि का या द द प हं स द ला स मे
स्स स र जा इ मा ए दि गि य आ ए ण लि णी प भा णि मु णा लि आ उ अ ल स हुं गे ह्ति अ-आ अ ख मि॥ इ त्य थो प परि क म्पो
प स त्य च॥ ने लि नो प ना णि गृही त्वा ह र ये द दि ति॥ ने लि नी प ने श य ने म ए लो व ने यो मि र च इ त्या सा ग रि का या द द प नि सि
प ति॥ सा ग॥ सहि अ व लो हि इ मा इ ण लि णी प भा इ मु णा ल व ल वा इ अ॥ अ ल ए दि ए॥ को स अ-आ रणे अ-आ रणे आ सी त मि॥
रां न ण मि॥ दु ल्लं ह ज णा ए उ रो अ-आ लं ग र इ पर व सी अ प्पा॥ पि अ स हि वि स्स मे पे म्म म र णं स र णं ए व र मे कं॥ अ इ ति म र्छ नि॥

राम
५

नेपथ्ये का ल क ल ॥ कंठे सुत्वा य शेषे क न क म य म धः ॥ सुख ला द म क र्प न को ला ज रा रि ण ब ल च र ण र ण लिं कि णी च क्त्वा
 लः ॥ द ता ते को ग ना ना म दु स्स स र ण से भ्र मा द ष्य पा लैः ॥ प्र भ्र ष्य पं ध्र वे गः ॥ प्र वि श्रान्ति र्प ति मे दि र्म दुरा या ॥ २ ॥ न ह
 वर्ष वर्ष व रे म नु थ ग ण ना भा वा द पा स्य त्र पा मं तः ॥ कं धु कि कं धु क स्य वि श्रान्ति त्रा सा द ये वा मं न ॥ प र्व ता प्र पि भिः मि
 ज स्य स द श ना म्नः ॥ कि रा तैः ॥ रु तं कु झी नी च त ये व यो नि श न मे रा मे क्ष णा शो कि नः ॥ २ ॥ सु सं ॥ आ क र्ण्य ॥ स सं भ्र मं ॥
 स सं भ्र मं ॥ स हि प ठे हि ॥ ए सो खु दु कु वा ण रो द रो जै ध्व आ अ छ दि ॥ सा ग ॥ किं द णी क रि स्सं ॥ सु सं ॥ इ हि इ म स्सिं त मा ल
 वि ड वं च आ रे प वि सि अ ये द आ दि वा हे म् ॥ प रि कृ म्य ॥ उ भे ए को ने प र्थ व स्थि ते ॥ सा ग ॥ सु सं ग दे कं ह तु ए चि त्त फ ल
 उ उ ठि दो ॥ क द्वा चि को वि र पे ख दि ॥ सु सं ॥ आ सु स्थि दो कं अ न्न वि चि त्त फ ल ए ण क रि स्सं सि ॥ ए सो वि द धि म भे ले
 प डो ए द पं न रं उ ग्घा डि अ दु कु वा ण शो अ दि कं तो ॥ ए सा दु मे ह वि णी उ डी णा अ स दो ग छ दि ॥ ता ए हि लो डु अ ए सु
 रे म् ॥ इ म स्स आ लो व स्स ग हि द र व रा क स्स वि पु र दो मं ने इ स्स दि ॥ सा ग ॥ स हि ए वं क रे म् ॥ इ ति प रि कृ म मे ॥ ने प थ्ये ॥
 ही ही नोः अ च्छ रि अं २ सा ग ॥ वि लो क्य ॥ सु सं ग दे ज्ञा णी अ दि क हि पु लो दु कु वा ण रो ए व आ अ छ दि ॥ सु सं ॥ द द्वा वि ह स्य
 अ धि का अ रे ण मे हि न दि णो प रि वा स ती ख ए सो अ न्न व से त उ ॥ न तः प्र वि श्रान्ति ये से त क ॥ व से त क ॥ ही ही नोः अ च्छ
 रि अं २ सा दु रे सि रि खे ड दा स द ध मि अ सा दु ॥ सा ग ॥ स स्य ह म व लो क य ति ॥ सु सं ॥ स हि किं ए दि णा दि डे ण ॥ दू री कृ ता
 खु सा आ ता ए हि अ ए सु स रे म् ॥ व से त क ॥ स दु रे सि रि खे ड दा स द ध मि अ सा दु ज्ञे ण दि स मे तै ण ए व ते ण दो ह न ए ण इ दि सी
 लो मा लि अ सां भु ते ॥ जे णा ता इ त रु मि न कु सु म गु छ स्था वि अ वि ड वा उ व ह सं ती वि अ न रा गी अ दि दे वी प रि णा हि दं मा ध
 वी ने द ॥ त ज्ञा व ग दु व पि अ व अ स्स स स णि वे दे मि ॥ प रि कृ म्य व लो क य च ॥ ए सो खु पि अ व अ स्सा न स्स दो ह ले स्स न इ प
 च अ दा ए प रो ए व वि ते ण मा लि अ प च्छे रं व वि अ कु मि दं पे खं तो ह रि सु कु श ले लो अ णा इ दो ए च आ अ छ दि ॥ ता व णो उ प
 स प्प मि ॥ इ ति रा ज्ञा नं प्र ति नि र्ग त ॥ न तः प्र वि श्रान्ति य चा नि दि द्वा रा जे ॥ रा ज्ञा ॥ स ह र्ष ॥ उ द मो क लि को वि पां ड र रु चं आ र
 र धं जं भा क्ष णा द या स ष्य स नो ह मे र वि र ले रा त च ती मा ल मे न ॥ अ चो घा म ले ता मि मां स मे द नो ना र णि म वा न्थो ध्रु वं प श्य च

यत्तववर्द्धनं तन्मा
नरायणाय नमः

सगर्वं

विश्वासवि

धः ॥ दंपत

धः

राम

कोपविपांडुरधुतिमुखं देव्याः करिष्याम्यहं ॥ ३ ॥ विदूषक ॥ सहसोपसृत्य ज अदुरप अव अस्सा ॥ भो व अस्सु दिदि यत्तववर्द्धनं तन्मा नरायणाय नमः ॥
अवकुसि येरादिस्त ने त्रेणो दुपु ने पठति ॥ राजा ॥ वयस्ये कस्य देह ॥ अविं त्यो हि माणि मे औषधी नां प्रभाव ॥ ने दादेशय
मार्ग ॥ येन वयमघत दव लोकनेन यक्ष ष फलमनुभवा म ॥ विदू ॥ सां कोपं ॥ एदु एदु भव ॥ राजा गच्छ गते ॥ उभोपेका
मते ॥ विदू ॥ आ कर्ण स मयं नि रत्य राजा ने गृहीत्या ॥ ससंभ्रम ॥ भो व अस्स एहि पला अम्ह ॥ राजा ॥ किमर्थ ॥ विदू ॥
भो ए अस्सि व उल पा पा रवे को विभू दे पा डि व सो द ॥ राजा ॥ धि ऊ र्व वि वि स्त धु ग म्ये तो ॥ कुत र्दृशाना म त्र प्रभाव ॥
विदूषक ॥ वि कु डं र व रं ए व मे ते दि ॥ ज इ म म घ र्ण अण ए प त्ति आ अे सितो अणा दे भ वि अ स अ ए व आ अणे हि ॥ राजा ॥
तथा के त्या अ लो च ॥ स्पष्टा क्षर मि दं ना व न्म धुरं स्त्री स्व भा व त ॥ अ ल्यं ग ला द नि क्रु दि म न्ये व द नि सारि का ॥ ४ ॥ उर्ध्व नि
रूप्य स्मि तं रु त्या सारि कै व ॥ विदू ॥ उर्ध्व नि रूप्य ॥ क चं स चं ए व सारि आ ॥ राजा ॥ वि ह स्य ॥ एवे ॥ विदू ॥ भो व स्स तु मे भ
या लु ॥ जे ए सारि अं भू दे ति मा भे सि ॥ राजा ॥ धि ऊ र्व य दा त्म रु जे न न्म धि सं भा व य सि ॥ विदू ॥ भो जे इ ए वं मा ख
म लि व रि सि ॥ सरो ष ॥ इ ड का ष मु घ म्य आ दा सी ए धी ए सारि ए नु मे णा सि स चं ए वं वे भ र्ण भा अ दि नि ता वि
ए र्द मि र्णा पि सु र्ण ज र्ण हि अ अ कु डि ले ए रं ड अ ठे ए पार प कं वि अ क इ त्य फ ल ने इ मा दे व उ ले पा द पा द अ ध रि
अ पा ड इ स्सं ॥ इ ति हं तु मु घ ने ॥ राजा नि वार य न्म र्ण क र य तो कि म प्ये वार म र्णी यं ग्रा हर ति ॥ त कि मे नो आ स य सि ॥
उ भा वा क र्ण य ति ॥ विदू ॥ एवं भ र्णा दि र म स्स वे भ र्ण स्स भो जे न न्म धि जे इ ति ॥ राजा ॥ स र्वे म यो दि र क स्या भ व हार ए
व प र्य व स्य ति ॥ न स त्ये व दे कि मा ल प ति सा ग रि का ॥ विदू ॥ आ क र्ण ॥ एवं भ र्णा दि ॥ सह की स तु ए ए त्य चि तं फ ले हे अ
हं आ लि हि त ॥ स हि मा कु प्य ॥ ज दि स्तो नु ए का म दे वो आ शि हि दे ता दि सी र यो म ए आ लि हि दे ति ॥ ता भो व अ स्सो के र
दे ॥ राजा व प स्य ए वे न कं या मि ॥ क पा पि ह द्य व ले अ नु रा गा र मि लि ख्य का म दे वो य दे शे न स र्वो पुर नो अप ह्नु ने ॥ न
से र्वा अपि प्र त्य मि शो ष वे र्ग्या द सा य पि त त्रै व र ति य प दे शे न आ लि खि ते नि ॥ विदूषक ॥ भो व अ स्स रु ज दि ॥ राजा ॥

वयस्य तल्ली नव॥ पुनरपि काहरता तच्छृणु वस्ता वत॥ उभा वयि शृणु तः॥ विदुः॥ भो वयस्य एव भणदि स हि मा लज्ज
इदं सस्म कलार अणस्म इदं से वरे अभिला सेण होदु॥ राजा॥ अस्मि कोचि धुक्ति॥ विदुः॥ भो अस्स मापे डि
अग व उव्व ह॥ अहं दे ए दा ए मु हो दा मुणि अ स व वार नो लो इस्स॥ जा ए सा आ लो हि दा सा क स्या दे मणी आ॥ राजा॥ व
यस्य यद्ये वे अ वी ह ने रे व आ त यो॥ अस्स य व क शो नः कु ते ह ल स्य॥ विदुः॥ भो व अस्स सु द तु ए ने ए दा ए मे ति द॥ स हि अ
व लो हि ने इ मा इ ल नी ली प ता इ मु णा लि आव ल ने आ इ आ॥ स हि को स अ आ रणे अ तो णे आ आ सो सा॥ राजा॥ वयस्य
न के व ले ऋ ते म भि प्रा पो पि बुद्ध॥ विदुः॥ भो अज वि कु र कुरा अ दि ए व स सारि आ॥ दा सी ए धी आ॥ ता स व सु णि अ व र व दा स्यां पु
ण इ स्स र॥ राजा॥ यु क्त म भि दि ने पु न रा क र्ण य त॥ भो व अस्स ए सा र नु सारि आ दा सी ए दु ह दा व उ धे दी धे भ णा वि अ रि वा इ ती॥
भ णि दु प उ त्ता॥ राजा॥ वयस्य क य य धि म य्य न्य ये त्ता म या ना व धा रि तं॥ कि म न यो क्क म ति॥ विदुः॥ भो ए व भ णा दि दु खे
दु ल्ले हे ति पु न प ठ नी य॥ राजा॥ वयस्य ए वे वि धं न वे ते वा षु ण म क्क के न्य ए वे वि धा ना म् चो म भि र॥ विदुः॥ न तो किं ल ए दं
राजा॥ न नु गा धे यं॥ विदुः॥ किं गा धि आ त दा किं क हि आ॥ राजा॥ वयस्य क या पि स्वा ध्य ये व न या धि य त म म ना सा द य सो हो
यि त नि र पे स यो के॥ विदुः॥ उ धे वि ह स्य भो किं दा हं व क भ णि दे हि उ जु अ ए व किं ल भ ण सि त्ते ह मे ए व अ ण सा अ ये ती ए ति
अ ण रु के ए सो कु सु म चो व व दे से णा रि ए र्द यी अ दि॥ ह स्ते ता लं द ला उ धे वि ह स ति॥ राजा॥ उ ध्व म व लो क्य धि ऋ खं वि
मु धे वि ह स्ता ल या आ सि ते पे॥ ये नो दु य अ न्ये न को पि ग ता॥ इ ति नि ह व प त॥ विदुः॥ वि लो क्य॥ ए सा क अ ली व रे ए व ग दे॥
ता ए हि अ ण स र म्॥ इ ति परि क्र म तः॥ राजा॥ दु र्वा ते कु सु म श र य धा य हं सा त वे यो प द भि ह ने पु दः स नो॥ प इ यः श षु
क सारि क भि रू के ध न्या नो अ व ण य पा ति धि ल म ति॥ विदुः॥ भो व अस्स ए वे सु क अ ली ध र अ॥ जा व प वि स म्॥ इ ति
प्र वि श नः॥ विदुः॥ कि ए दां सी सी ए धी आ ए सा रि आ ए इ ह दा न म ने अ वी स म म्॥ राजा॥ प द भि रू चि ते म य ते॥ इ पि वि क मे
नः॥ राजा॥ दु र्वा ते भि ति पु प ठ ति॥ विदुः॥ पा र्श्वे तो व लो क्य॥ भो व अस्स॥ ए ते दे ण उ धा डि अ दु वारे ण उ द्ध वा ण रे ण ता ए सा
रि आ ए वे दा रे ण हो द व॥ राजा॥ वयस्य नि रू प्य ता॥ विदुः॥ जे म ये आ ण वे दि त्ति परि क्र म्या व लो क्य व ए सो वि चि तं फ ल उ
भो व णा गे ह्मा ति॥ ग हा लो नि रू प्य वा स ह र्व॥ भो व अस्स दि ष्ठि आ वे ष्ठे सि॥ राजा॥ स को नु के॥ वयस्य कि मे न ने॥ विदुः॥ भो ए दं

७

जेमलभगिदं॥ नुमेजेयएथ आलिहिदो अस्सहाको अस्सो कुसुमवावधवदेसे एणि एहवी अदिता॥ एजा॥ सहर्ष॥ हलोप्रसा
पसस्सि सनपय॥ विदु॥ एते सइस्से॥ सोविके ए एथ एथ आलिहिदेत्तिता किं परि नोत्ति ए एणि ए इदि सके एर अशंद
सी अदि॥ राजा॥ कटकमेव य नैव वला हू ही लाप न के पप्रपति॥ विनाय्य॥ सविस्मय॥ वयस्य पप्रपली लावधत पप्ता कथयं
ती पप्रपत मधि के न॥ मानसमुपेति के ये चित्रगती राजा इसी व॥ ध॥ विधा पाप र्व एण दु अस्या मुखमा र्ध्र वं॥ धाता
निजा सनो भो ज विनिमो न न दु स्थित॥ ७॥ तेने प्रविश तिसु संगता॥ सागरि का ये॥ सुसंगता॥ ए सता सादिदो अमूहि सा
रि आचिन्न फ न अपि शयद मा दो क अनी हरा दो गणिह अ न दु ग फ म्॥ सागा॥ सहि ते करे म्॥ इत्युप स र्पत॥ विदु॥ भो
वयस्स की स उ ए सा अ ए अमुही आलिहिदा॥ सुस॥ आकर्ण्यो सहि ह व स त अ म ते दि ते ह त के मि ने दि ला वि य स्य हो द वं॥ ता
क अनी हर गु म्म त रा भवि अ वे र य म्॥ इत्यने आकर्ण्यते॥ राजा॥ वयस्य सारिक ये व स क ले मा वे दि तं॥ सागा॥ सहि द सि
द सारि ए ए अत्र ए मे र वि त ए॥ विदु॥ अबि सु ह अबि दे नो अण रा ये ति॥ राजा॥ वयस्य॥ सुख य ती ति कि मु अ ने॥ कृष्ण
दू र युगं व्यती स मु वि रं भो ला नि ते व स्थ ले म भे स्या स्त्रि व नी त रे गा व ध ने नि ष्य द ता मा ग ता॥ म द ए लु षि ते व स प्र ति श ने
रा ह्य गौ तु स्त नो सा कां शं मु कुरी क्ष ते न न व प्र स्य दि नी च ने॥ ८॥ सुस॥ सहि सु दं तु ए॥ सागा॥ तु म ए व सु ए॥ जो ए आ ले ए व
बि ल ए य स्ती अदि॥ विदु॥ प न के नि र्व र्ण्य॥ भो व अस्स ज स्स उ ए इ दी सी अ भि वं पि अ स मा ग म् व द्म म स ति त स्स वि उ व रि
अत्र ए को परि भ वो॥ जे ए ए थ ए व ता ए आ लि हि दं अ त्रा ए अ ए पे ए व सि॥ राजा॥ नि र्व र्ण्य॥ वयस्य॥ अ न या लि वि तो ह
मि ति व त्स ल मा ल न्ये व ब हु मा न॥ त क्क थं न प प्र प मि॥ प प्र प॥ भा ति प ति तो लि जं स्या स्त स्या वा प्पा वु शी कर क एो ध॥ स्व दे द
म इ व के र त ल सं स्य शो दे ष मे य पु षि॥ ॥ सागा॥ आ ल ग तै॥ हि अ अ स म स्स स र म ह लो र हो वि दे ए ति अ भू मिं ग दे॥ सुस॥
सहि तु म ए व ध र्मा स ला ह ली आ अ॥ ज ए भ द्द ए वं से तो॥ सी अदि॥ विदु॥ पार्थ तो व नो क्य॥ ए दं अ व रं सर स क म लि नी द न म्
ए लो वि र द र मा ए ए व म अ ए वा स अ अ स अणी अ न र वी अदि॥ राजा॥ नि पु ए म्प ल सि तं॥ तथा हि॥ परि म्मा ने पी न ल
ने जे च ने सं गा दु भ य त स्त नो र्म ध्य स्या न परि मि ल ने म प्र ण्य ह रि ते॥ इ दे व्य स्त न्या सं स्त त भु ज ल ता स्ते प व ने नैः कृ श ण्या से ता

राम
७

[illegible]

कोच॥ भौदुली॥ नरुस्तीयेन दृमतेदितरुने हतकेभिर्भौदुलीं एव फडवाल अंतोचिदुदि ताहपसप्यदुभादुली॥ वास॥ उप
 सत्य॥ जे अदुज अदुअ उते॥ राजा॥ अपवार्य॥ वयस्य प्रकादयचित्रफलकं॥ विदु॥ गृहीत्याकशो नोक्षिपति॥ वास॥
 अजोउतेकुसुमिदणोमालिआ॥ राजा॥ सविस्मयेदिविप्रथममागतेस्मानिस्त्वचिरयेसीनि नदृष्टानेदेहिसमेतायेन
 तोपशपाव॥ वास॥ निवेदय॥ अजोउतेमुह्युरागादोएवमएजाएदं हतकुसुमिदणोमालिआ॥ तताणगमिस्स॥ वि
 दु॥ भौदिअदु एवताजिदं अमेहि॥ इतिवाहप्रसार्यन्त्येति॥ कक्षापतिनेफलकं दृष्टाविषादनादुयति॥ राजा॥ अपवा
 र्य॥ अगुत्यादशयनवसनेकमेखंपश्यति॥ विदु॥ अपवार्य॥ भोभोमाकुपयएसशाणस्स॥ कोच॥ फलकं गृहीत्या॥ भौदु
 लीपेरखदावकिरत्यचित्रफलहे अलिहिदं॥ वास॥ निवेदय॥ स्मिगंतं॥ अजोउतेअउणसो॥ आरुआ॥ प्रका
 शंराजानेप्रति॥ अजोउतेकिं एदं॥ सेवेनक्षयस्मिने॥ अपवार्य॥ वयस्यकिं कवीभि॥ भौचिनेहि॥ अहउतेरेदंदाइस्स॥
 प्रकाशवासवदत्तोप्रति॥ भौदिअप्याकिलदुखे अलिहि अदिस्मिनेव अणुसुणि अपिअवेअस्से एदंविस्साएदं
 सिदि॥ राजा॥ यथाहवसेन कस्तुथेवतरे॥ वासव॥ फलकं निदिश्यमाजोउतेरसाविजा अवरानुहसमीवे अलिहि
 किवसेन अस्सविस्साए॥ राजा॥ येनक्षयस्मिने॥ अलमनयाशंकयी॥ इधंदिखनेनसेवपरिकल्पालिखिता॥
 ननुदृष्टयी॥ विदु॥ सयावमसुते एहइकराधि अमेहिईदिस्सीदिदृष्टुवो॥ कोच॥ अपवार्य॥ भौदुलीकस
 विदिदिसंउण पुण एवरंसंवादिजेधता अलंकेवेण॥ वास॥ अणुउजुए एदस्सवक्रभाणिदाइ एणएसि॥ वस
 ते अरुएसो॥ प्रकाशं॥ राजानंप्रति॥ अजोउतेममउण एदं चितं पेखनी एसो सवे अणा समुप्यसा तोसुहं चिदु
 अजोउतो अहं॥ मिस्सेइत्युथायगमिस्सति॥ राजा॥ पदातेन गृहीत्या॥ दधि॥ प्रसीदेति ज्ञेयामिदमसनि केवेन
 घटनेकरिष्याम्येवं नोपुनरिनिभवेदभुपगमः॥ नमेदोयोसीनिलमिदमपि चक्ष्यसि मखाकिन नस्मिन्वक्तु
 दाममिनि नवेति प्रियनमे॥ ॥ वास॥ सविस्मये॥ पदानमाकर्षेता॥ अजोउतेमा अणुधासंभावेहि॥ सधेए

मस्सं॥ नुमं पिइहृद जेव पाडवा लइस्ससि॥ तदेमाह्वील दमं उवेता एसह भट्टिणे संग १६

मेसी सवे आणा वा घेदि नागमिस्सं॥ इति निष्क्रान्ते॥ विद्॥ नोदिहृद आववुसे खे मे ए अदि कं ता एसा वास वदना
 अ आलवा होलिन अद्य॥ राजा॥ चिद्दु खे अलं परितो नेणे॥ कोत्या निगटे न लेसित स्त्रिया देया कोपा नुवंधः॥
 पश्य॥ अ भं गे सहसो दुते पि वदने नी ते परे न म्ना ईष नो प्रतिभेद कार हसित नो कं व यो निष्ठु अंत य धिज
 डा कृतं प्रभुतया च रेक ने विस्मरितं को पश्य प्रकटी कृतो दयितया मुक्तं च न प्रभयः॥ ॥ तदेहि देवी प्रसाद इतु
 मभ्येतर मेव प्रविशायः॥ ॥ इति निष्क्रान्तो द्वितीयोक्तः॥ ॥ ततः प्रविशति मदानका॥ आकाशे॥ को सं वि ए
 अविदिहृद नु ए भट्टिणी स आस के चरण मा लो न वेत्ति॥ आकर्ण्य॥ किं भणामि॥ को यि कन लो तो ए आ अवि
 अगदा एति॥ ता क हं दारि वे रिव स्सं॥ अग्रतो व लो क्य॥ कहं एसा रू के चरण मा लो डा दो जेव आ छदि ना जाण
 उव सप्पमि॥ ततः प्रविशति कं च न मा लो॥ २ सो छु स॥ सादुरे व स तं असाहु॥ अदि स इ दो नु ए अम सो जो अध
 रा अलो इमा एस धि वि गार विं ता ए॥ मदा॥ उपसृत्य॥ ह लो कं च न मा लो किं अजु व स तं ए ए क द जे ए सो स च्छं
 स लो ही आदि को य॥ ह लो कित व ए दि एा पु ए छि देणे॥ प अ अलो नु मं इ मं र ह स्सं र रिव दु स पा रं सि म द॥
 स वामि देवी ए चरणे हे॥ अ इ क स्स वि पु र दो प आ से मि॥ को य॥ अ इ ए स तं ता मु ए॥ अ जो र वु न ए रा अ कु ला दो प
 डि रि व त मा एा ए चित सी लि आ दु वारे व स त अ स्स सु संग दा ए सा अ से आ ला वो सु दे॥ मदा स को तु कं॥ सी हा
 कि दि सो॥ को य॥ जे ह सु संग दे एा हि सा रि अ वा जि अपि अव अ स्स अ स्स किं पि अ स्स त्प दा ए कार एा॥ ना ए थ्ये
 डि आ र विं तो ह॥ मदा॥ त तो सु संग दा ए किं भा ण द॥ को य॥ त दे ना ए ए थ्य भा ण द॥ अ ज खु दे वी ए चित प ल अ यु तं
 त सं किं दा एसो आ र अ म्म मह त्ये स स म प्य अ ती ए जे से व थ्य मे प सा दि क द॥ त दे ते एा ए व वि र इ द भ ट्टिणी वे स सा
 अ रि अं गे एि अ अ ह पि क च एा मा लो वे स धा रिणी भ वि अ प दा सं स आ स भ ट्टि एा सं र्ग मो भ वि स्स दि॥ मदा॥ सु
 संग दे ह दा सा र वु नु मं जो ए चं प रि अ ण व छ लं दे वि व वे सि॥ को य॥ ह लो दारि नु मं के हि प धि दा॥ मदा॥ अ स्स त्प स री र
 स्स भ ट्टि एा कु स ले नु ते न जा रि दु ग दा नु मं चि र या सा न्नि उ त म ती ए दे वी ए तु ह स आ से पे सि द मि॥ को य॥ आ दु उं

9

राम

आसदिनी प्रा एवं पात्रि आ आदि ॥ परि क्रम्यावलोक्य च ॥ क ह ए स्य ए सो खु म दृ अर स्य पि दा भि से ए अ त ली म अ ए व स्य
 प षा ५ अ तौ द ने तो र ए व न ही ए उ व रि उ व वि हु वि हु दि ॥ ना ए हि ए दं वु तं तं भा दृ णी प रि वे दे म् ॥ इ ति नि श्चि ते ॥
 प्रवेशकः ॥ ततः प्रविशति मदनो कस्यो ना ट्य मु प वि षा रा जा ॥ रा जा ॥ सो तं कं ठ नि श्च स्य ॥ सं तो पो हृ द ये स्म रा न ल क्त त सं प्र
 त्य यं स त्य तो ना स्म को प श मो हि तो प्र ति पु नः ॥ कि ल्य मु धा तो म्य सि ॥ य न्मू ट न म पा त रा क थ म पि प्रा त्तो ग ही ला चि रं वि न्य
 ल त्व यि सां इ चं द न र स स्य शे ने त स्याः करः ॥ ॥ अ ह म ह द श्च र्य ॥ तेषा हि ॥ म न श्च लं प्र कृ त्वै व दु र्ल भं च त पा पि
 ने ॥ कामे नै त क थं वि दू स म स र्वैः शि ली मु र वैः ॥ ॥ उ र्वे स व लो क्य ॥ भो कु सु म ध न्य न् ॥ वा णाः पे च म नो भ व स्य नि म
 ता तेषा म स र्यो ज नः प्रा पो स्म दि ध ए क ले द्य मि ति य श्चो के प्र सि द्धि ग तं ॥ दृ ष्टं त ल यि वि प्र ती प म धु ना य स्मा द सं ख्ये
 र यं वि दूः का मि दू नः श रे र श ए नी तः स्त य प यं च नो ॥ ॥ वि चि त् ॥ त यो ह मे व वि धा व स्या मा त्मा नं नो नु चि त य मि ॥ य
 था अ त गृ ष्ठ को पं स भो रा या दे व्याः लो च न गो व र ग तो ना मे च त प स्वि नी सो ग रि का ॥ त यो हि ॥ द्रि या स र्व स्या धो न य न
 वि दि ता स्मो न व द नो ह यो ह दृ ष्णो प क ल य नि क थो मा त्म वि ष यो ॥ स र्वो बु स्म रा सु प्र क ट य नि वै ल द्य म धि कं प्रि या प्रा
 ये ण स हृ द य नि हि तो नं का वि भु रा ॥ ॥ प्रो षि तं वि मु या त द त्ती नै ष ण यं क थं चि र य नि व सं त कः ॥ त तः अ वि श ति हृ ष्ट
 व सं त कः ॥ व सं त कः ॥ स प रि तो षं ॥ हा ही भोः के स वी र ज्ञो ना हे णा वि ण ता दि स्तो वि अ व प्र स्स स्स हि अ अ प रि तो सो
 आ सी ॥ ता दि स्तो म म स आ सा दं ज्ञो पि अ वे ण सु णि अ भ वि स्स दि ति त के मि ॥ ना जा व ग दु अपि अ व अ स्स स्स णि वे द स्स ॥
 परि क्रम्या व लो क्य च ॥ क थ ए सी पि अ व प्र स्सो ज ह द्मं ए वो द स्स अ व नो वि तो वि हु दि त ह न के मि मं ए घ प डि वा ले दि ॥
 ता जा व लं उ व स यो मि द्मु प स्त य ॥ ज अ दु र पि अ व अ स्सो ॥ भो व अ स्स दि हि आ व दू से तु मं स मी हि द क ज्ञो सि द्धु ए ॥ रा जा ॥
 सह र्व व य स्य अपि कु श लं प्रि या याः ॥ सा ग रि क थो ॥ वि दू भो अ र रे ल स अ ए व पे सि व अ ज्ञा णि द स्स सि ॥ रा जा स प रि तो वं ॥
 व य स्य द र्श न म पि भो वि ष्य ति प्रि या याः ॥ वि दू ष कः ॥ स ग र्वं भो की स ए भ वि स्स दि ज स्स दे उ व ह सि द वि ह्म दि बु द्धि वि ह्

सम
९०

वसंतकः॥ तस्मिन् नुरप लुकिदिनस्यादयं रतीतो देव्या वासवदत्तायाः॥ ततः प्रविश ७
इतमत्रमहुः अरव वहलकुसुमामोदगासिद्धसादसामुहमसिएमरगः अग्रणि सिलाकुट्टिमसुहः अंत
चरणसंचारस्सुदने एवमारुकी लक्ष्मण्डवसप्यनम्ह॥ तादृजवचिष्ठुभवंजायदहं देवीवै सधारिणी
सा अरि श्रेणैरिह अलहुः आ अग्रमि॥ राजा॥ वयस्य तेनेत्येतो॥ विदुः॥ व अस्समाउत्तमो एसो आ अदोहि
इतिनिष्क्रान्ते॥ राजा॥ तावदस्मप्यस्यामरकनशिः नावोदकायां मुपविशप्रियायाः संकेतसमये प्रतिपालया
मिउपविशसचिन्ते॥ अहोकोपिकामिजनस्वस्वगृहिणी समागमपरिभाविनोऽग्निनवंजनं प्रतिपक्षपातः॥
तथाहि॥ अरण्यविशदं दृष्टवैकुण्ठं दत्तिनशकिताघटपतिद्वनकं ठाश्वे वैरस्तान्नपयोधुरो॥ वदति बहुशो गच्छ
मीतिप्रयेत्नेधताप्यहं स यनितरा संकेतस्या तथापि हि कामिनी॥ ८॥ अयेकयोचशयने वासवदत्ताकांचन
मालाच॥ वासवदत्ता॥ हं जकेचनमालेस ध्वं एवममवे सधारिणी एभवि अस्स आर आ अजो वतं आहरीमस्स
दिति॥ कोच॥ कथं अलं धा भद्रली एरिगवेदी आदि॥ अहवाचिन्तु सालि आवा रे उवीठु देवसेत उ जेधे देप
वे अउप्या इस्सदि॥ वास॥ तदार्ते हिं एवगच्छम्ह॥ कोच॥ एदुर भद्रिणी॥ इतिपरि कामने॥ ततः प्रविशति क
तावगुठनो वसंतकः॥ वसंतकः॥ इत्यो॥ जह अ अन्वि त्रे सालि आ दुवा रे पदसदो सुली आदि तहन के मि आ भद्रा स अ
रि एति॥ कोच॥ भद्रिणी इयसा चित्तमालि आ ता सा व वसेत अस्स स सं करोमि॥ इति श्रेष्ठ कोदरति॥ विदुः॥ सह
र्षो॥ उपसृत्य सस्मिता सुसंग दे सारस्तो खुनु एकिके कंचेण माला एवेसो॥ अथ सा अरि आदृणि कहि॥ कोच
न॥ सुस्तग दे सारिस्तो खुनु एकिके कंचेण माला एवेसो॥ अथ सा अरि आदृणि कहि॥ अगुल्फादयैयती एं एसो॥
विदुः॥ दृष्टु सविस्मयो एसो फुड एव देवी वासवदत्ता॥ वास॥ स स भ्रममपवाप्य॥ इज कहं लो अदोहि विदुः॥ भो दिदु
सा अरि ए इदो आ अग्रदो वास॥ विहस्य कोचने मालामवलोकयति॥ कोच॥ भद्रिणी एव एहं॥ अगुल्फो तर्जयती
हृदासमु मेरिस्सिएव अणं विदुः॥ ते अरदुनु अरदुसा अरि आ॥ एसो खुपुबदिसा दे उ गच्छ दि म अ वोमि अल
खणो॥ इति निष्क्रमति॥ राजा॥ सोल्लेठं आस्मि गते उपस्थितप्रिया समागमस्यापि किमिदमस्य मुतो म्यनिममनः॥

५९

अथ ॥ श्रीगुरुस्वरसंतापेन तथा सौवाचने पद्यासने ॥ तपनिश्वरप्रितितरामभयर्णहृत्तागमोदिवसः ॥ १० ॥ विदुः ॥ आनर्ण
मोदिसाग्रि ए ए वृषि अवे अस्सो तुम ए वृ उद सि अ उ के गणि भ्रम तेने दि ॥ तानि वी दानि तुहा गमणे ॥ वास ॥ शिरश्चा
ले पति ॥ विदुः ॥ रातो नमु पस्य ॥ मो व अस्सि दि वि अ व ठ से ॥ एसा सु म ए आ सी दा सा अ रि आ ॥ रातो ॥ सहर्ष ॥ सहसा
साय ॥ मो व अस्स क्का स्तो र विदुः ॥ एसा ॥ रातो ॥ उपस्य सा प्रिये सा ग रि के ॥ शीतो शुभु खेतु समु ने न देशो प लो नु कारे क
गैरे भाग र्भ निभंत वो सु यु ग ली या हृ म् ए लो प मो ॥ इत्या द्वा द करा खिलो गिर म स्तान्निः शोक मालि ग्य मा म गानि ल्य न
न गता प वि धुरा ए प ह्यो ह र्नि वी प पे ॥ ११ ॥ वास ॥ स वा ण्य मे प वा र्थ क व मा ले ए वं स अ मे ते दि अ ज्ज उ त्तो पु र्णो पिक ह आ
ले यि स्स दि नि ॥ अ हो अ च्छ रि अ ॥ के व ॥ न दि णि ए वं ए द ॥ किं उ ए अ व रं ता हे सि आ ए पु रि सा एं दु ष्क रं स भा वी अ
दि ॥ विदुः ॥ मो दि सा अ रि ए वी स द्वा भ वि अ पि अ वे अ स्सि आ ला वो ह ॥ अ ज्ज वि द वा ण्य बु रू द्वा ए दे वी ए वा स वे द तो ॥ ए
दु व अ णो हं क दु रं सा इ सो त्रा इ स प दं सु हा वे दु तु ह म इ र व अ णो व लो सो ॥ वास ॥ सरो व ॥ अ प वा र्थ ॥ अ गु ल्या ने र्ज यं तो
ह द स सु मा रे स्स सि ए दं वे अ णो ॥ विदुः ॥ वि लो क्य ॥ मो व अ स्स पि स व ॥ ए सो सु कु वि र का म लो क यो ल स प्य हो स वं अ प्य
ओ स अ तो उ ठ दा न अ व मि अ ले छ णो ॥ रातो नि स प्य स स्स हं प्रिये प ष्प ॥ आ रू खि शे लो श्र य र्ण ल द द ना प ह
न को ति स र्व स्वि ॥ फू र्क तु मि को इ करा खितः पु र स्ता नि शा ना यः ॥ अपि व ॥ अ तु प्रिये ॥ किं न र किं त म ने ना द्वा ख तो न ह
इ ली ॥ कु त ॥ किं प न स्प रू नि न ह ति न म ना ने द वि ध त्ते न किं रा हं वा श्र प के ने त स्य क रू ते ना लो क मा त्रे ण किं ॥ व के
दे ने व स त्थ पं प द पर ॥ शी तो शु रु ज्ज भ ते द र्प स्या द म्भ ने न वे दि हं त द प्य त्थे व वि वा च रे ॥ वास ॥ स शो ध म वे दु ठ न प द
म प नी पि ॥ अ ज्ज उ त्त स धं ए व अ ह सा अ रि आ तु ने उ ण सा अ रि आ उ पा रे व ते हि अ ओ स वं ए व सा अ रि आ स रि स्स पे र्ण
सि ॥ रातो ॥ इ द्वा स वे ल र्प ॥ हा पि क ष्ण क यं दे वी वा स वे द ता ॥ व य स्य कि ने ने त ॥ विदुः ॥ स वि षा द ॥ मो व अ स्स किं
अ म्हा रां जी र्थि द स स उ ज्जा दो ए सो ॥ रातो ॥ उ पा वि ष प ॥ अ ज्ज लि व द्वा पि पे वा स वे द ते प्र सी द रे वा स ॥ अ ज्ज उ त्त मा ए वं
ण ॥ अ षो ग द ए रे अ र ना रा ॥ विदुः ॥ आ ल ग ते ॥ किं द णि ए स का रि स्स मो ड ए व दा व ॥ अ क र्णी ॥ मो दि म ह दे वी सु तु मे ना
ख मी अ दु रा व श के अ वा रा हो पि अ व अ स्सि स्स ॥ वास ॥ अ ज्ज वे स ने ॥ पु ण प ठ म स ग मे वि गं च करे ती ए म ए व र द स्स अ

राम
११

वरुं॥ राजा॥ एवं दृष्टव्यं लीकः॥ किं वीभि॥ तथापि विशा पयामि विलक्षण एव लाक्षां चरणयोस्तव देवि भूधा॥
 कोपोपरागजानि तां मुखे दुर्विवेकं शुभायदि परं करुणमयी स्यात्॥ इति पादयोः पतान॥ वास॥ हस्तेन वा
 रयती॥ अजउत्तउत्तेहिरणि॥ अजउत्तसदिति संहि॥ अजउत्तसदिति संहि॥ अजउत्तसदिति संहि॥ अजउत्तसदिति संहि॥
 विठु अजउत्त॥ अहं गमिस्ते॥ इति गच्छति॥ काच॥ भद्रिणी करोह्यसाद॥ एवं चरणपडि अमरा रा अउक्षि
 अगद ए देवी ए अवस्ते पछादा वेणुहोदवो वास॥ अवेहि अपंडिदेकि एत्यप सोद सपछादा वस्ते वा कारण॥ इति
 निष्कान्ते॥ राजा देवि मसीद प्रसीद रविदा॥ भो उठेहि रादा सा वासवदत्ता देवी॥ माक स एत्य अरस सादं करि सितराजा॥
 मुखं मुतानी कृत्य कथमं कृत्यैव प्रसादं गता देवी॥ विदुषा कदे क पसादं अजउत्तसदिति संहि॥ अजउत्तसदिति संहि॥
 धि अस्विक्रमे वमुप हसति मो॥ ननु कृत्यैव वा यमापेति तोस्मा क मनर्थ क्रमः॥ यतः॥ समा रूपा प्रीतिः प्रणयवहु
 मा नाहेनुदिन व्यली के वीक्षेद कृतमं कृत्यैव पूर्वखलु मया॥ प्रियामु चत्य घस्यु टम सह नो ग्री नितमसौ प्र कृष्टस्य प्रेमः
 स्वव लितमविष ह्यं हि भवती॥ १५॥ विदु॥ भो रूपा देवी दाबण आरणी आदिकं करिस्सीदति॥ सा अरि आउण अजु
 डः खग्रीविस्सीदति॥ ततः प्रविशति वासवदत्ता वे पधारणी सा गारिका॥ साग॥ सोदं गं॥ दिठि आइमि एग वरिद देवी वेसे राइ
 मादे स गी सा लादोणि कृमं नी केण विण लरिखं ह्ति॥ नाकिं दणिं करिस्सं॥ इति सास्त्रं चित्तपति॥ विदु॥ भो किं मूढे वि
 अहुं स चित्तं हिएत्यपाडि अरि॥ राजा॥ वयस्यत देव चित्तयेमि॥ साग॥ विस्स॥ वरं दणि स अजउत्तसदिति संहि॥ अजउत्तसदिति संहि॥
 वरं दम विस्स॥ अजउत्तसदिति संहि॥ इति पादयोः पतान॥ राजा॥ वयस्यत देवी प्रसादमुक्ता ना ये मुपायं पश्यामि तदेतदेहित
 त्रैव गच्छाव॥ इति परिक्रामे तः॥ विदु॥ आ कर्णं चित्तं राव॥ भो पदसदं सुणि आद जोणमि कदापि गहि द्यसादा वा पुगी
 चिदेवी आ आस भवे॥ राजा॥ वयस्यमेतं नु भाखलु देवी कदाचिदेवमपि स्यात्॥ त्वरितं निरूपय विदु॥ अजउत्तसदिति संहि॥ अजउत्तसदिति संहि॥
 इति निष्कामति॥ साग॥ उपस्थे॥ राजा वेदम एमाधवी लरा ए इह जेव असो अपादव अप्याण अउत्तसदिति संहि॥ अजउत्तसदिति संहि॥

९२
१२

इति लतापाशोऽप्यंती हातादरहा अवरसादशिं अहं अणावा असरणवि अमऽऽनिमिदमाइली इति कंठे लतापा
शमपयति विदू विनोका काउले एसा कयउण देवी वासवदत्ता ससंभ्रममुच्चैः भो वप्रसपदिताहिर एसाखु देवी वा
सवदत्ता अप्पा सा अउ वधि अबोवा देदि राजा ससंभ्रममुपस्य वयस्य क्रसो राविदू ए एसा राजा कंठाया
शमपनयति अपिसाहसकारिणि किमिदमकार्यं कियते मम कंठगता प्राणाः पाशैः कंठगते तव नवस्यार्थप्रय
लोप्यस्य तासाहसं प्रिये ॥ १५ ॥ साग राजानं दृष्ट्वा अस्मोकथं एवमद्य सहर्षमात्मगतं स ब्रह्मणो वै सिवपुण
विमे जीविदहि नासो संवुतो अहं ॥ एणं वेरिख अकदत्था भवि असुहेण अप्पा एण उवधि अजीविदपोर अइस्सं ॥
प्रकाशं मुबदुमे भदुप राहिलोखु अजेणो एउण ईद स अवसरं नारदुपावो ॥ तुमपि देवी एमा अप्पा एण अवश
हिलं करेसि इति पुन कंठे पाशं दत्तुमिच्छति राजानिरूप्य सहर्षं कथं प्रियामेसा गौरा ॥ इति कंठाया शमा क्षिप्य
अलमलामिति मात्रसाहसेना मुना ते लोरितमपि विमुचसं लतापाशमेनं बलितमपि निरोद्धु जीवितं जीयिते शोक्षण
मिहमम कंठे वाहुपाशं विधेहि ॥ १६ ॥ इति वाहुपाशमा क्षिप्य कंठे ददाति सखे इयम नम्रा राहः विदू भो एवं सिदं ॥ न
इ अ आ लवाहा वली भवि अदेवी आ अस्मि अ अस्माधारणं रिस्सदि ततः प्रविशति वासवदत्ता कंचनमाला च वास
हं जे कंचनमालै मह चरणणि वाडिदं अउ उत अवधीरे अ आ अछंती एमह अदिणि ठुरं कदं तादशिं स अ एव गडुवं
अउ उतं अणुण इस्सं कंचन ॥ कंचन ॥ कंचन देवी वज्जि अ एव भणिदुं जणादि वरं सो एव दं वाडुं जणी हं दु एउण देवी
ता एदु देवी पारं कंचन ॥ राजा अपि मुधे किमघापि वयं विफलं मे नोरथाः जियामह कंचन ॥ भदि एणं हसं भवे भदुमं
तेदित हत के मि तुमं जे वु अणुण दु अ अछदिता उवसं पदु भदि एण ॥ वास ॥ सहर्षं ॥ ता अ लखि व द ए व पुठु दे गडु अकं
गेणिह अपदइस्सं विदू भो दसा अ ए कं स हं भवि अ अ व अस्सं आ ला वा ॥ वासा ॥ स कोपा कंचन माले सा श्री
आ वि ए ए व व दू दि तो सुण म्हा ज ए अ प छ उ प सा ॥ इति तथा स्थितो साग भदु ॥ किं एदि एण अ रि अ द
खि एण जी वि रा द वि आ दि व द्वा ए देवी ए पु ए वि अ तो ए अ अ वा रा हिलं करेसि भोजा अपि मि तथा वादि न खि व

राम
९२

सिक्तुतः॥ आसोत्कंपिनिकंपितं सनयुगे मौत्रप्रियं भाषितं वक्त्रे स्याः कुटिलीकृतं चरितं सुखापातं मया पादयोः
 इत्यनसहजामिदं जनितामेवैवदेवापरं पमावंधविबद्धं ताधिकरणप्रीतिस्तया सालेयी॥ १८॥ वासः॥
 उपेत्यः सरोषं॥ अज्जुतं सरिसं एदं॥ राजा॥ दृष्टा सवैलक्ष्यं॥ देवि नखं चकारे मासुपाले धुमोहिंसि॥
 मेधमलोवेषसा दृष्टा विवले ध्याव्यभिहागताः॥ न सम्यनामिनि पादयोपतति॥ वासा सरोषं॥ अज्जुतं उठेहि
 किं अज्जुतं सहजा हि जादी एसे वादुः खं अणुहवी आदि॥ राजा॥ स्वगतं॥ किमेतदपि भूतं देव्या॥ तत्सर्वथा देवी
 प्रसादनायापं प्रति निराशी भूता स्मः॥ इत्यधो मुखे स्तिष्ठति॥ विदूषकः॥ मोदितुमं किं न अत्राणं अउधं धिअ
 विवज्जासिद्धिं वै ससारिस्स मोहिदे एमएपि अवपस्सो एय आणी दो॥ जइममव अणं एपति आ अतिता परस्वमे
 लदापाशं दर्शयति॥ वासः॥ हं जे केवलमात्मे एदे एव न दोपासेण वंधि अणे एव भण॥ एदं अदुष्टकला अअगा
 दा करेहि॥ कोयं॥ जे देवी आणे वेदिनि लतापाशे न वसेते कं गले वधाता इयति॥ इहा स अणुभव दाव अने एो अयि
 ए अरसफले॥ देवी एदुधे अणे एाक दुइदाइ कला शत सुमरे हितं व अण॥ सा अरि ए तुम पि अगा दो हाहि॥ सागं॥
 स्वगतं अकिदपुला ए मरि दुपि अतं तो इहा ए ए पाण विहा विदुः॥ सविषादं॥ मोव अस्स सुमरे हि मं अणो धे देवी एव
 ध ए दो विवज्जितं॥ इति राजानमव नौ कयति॥ सर्वा निदापानि अना वा सवदता॥ राजा॥ सखे दो कष्ट मोः कष्टं
 किं देव्याः कृतं दीर्घं सेषमुधितं स्निग्धस्मितं तन्मुखं किं वासागारं कं॥ क्रमोदतं सुखासंतं ज्जमानां तथा॥ वध्यानी
 तमि तो वसेत कमहं किंचित्पा म्यधमोः सर्वा कार कृतं यथः क्षणमपि प्राप्नोमि नो निरति॥ १९॥ नत किमि
 दानीमि हस्तिने न त्रेयो जनं देवी प्रसाद इतु मभ्ये न रमे वप्रनिशामि॥ ॥ इति निष्क्रान्ताः सर्वे ततो योः कः॥ ॥
 ॥ १८॥ ॥ नतः प्रविशति रत्नेना लामामा दायसास्त्रासु संगता॥ सुसे॥ सकं रणं हायि असहि सा अरि ए हास
 हिपणा अइव खलं हाउ दारशो ले हासा प्रदसणे कहि गदा दाणिं तु मं म ए पे रि व द वा इति रोदिनि॥ उर्ध्वमव लोके॥

१३

१३

निम्न... हं हो देव हृद अ अकरुण अस्मा मस रूप असो हा तादसी तु ए ज इणी मि दा ता की स उ ए ई दि से अवस्थं तरं
पा वि दा ॥ इ धं चरणे अण मा ला वि जी वि द ए रा सा ए ता ए क स्स नि वृ ने ण स्स ह्म प ड वा दे सु त्रि भ र्णि अ म म ह स्सो
नि प्पि दा ॥ ता ज्ञा व र्ण भ र्णि अ सो सा मि ॥ ने प प्प्या मि सु खं म वे लो क ॥ अ ए क हं ए सो खु ये भ र्णो व स त ३ इ ध ए व अ
अ ष्ठि दा इ मं स्सि ए व प ड वा दे मि त त प्र वि षा ति ह्म व र्ण त क ॥ व स त क ॥ ही ही भो ॥ अ ज्ञो पि अ व अ ष्ठि दा
प सा दि दा ए दे वी ए वा स व द ता ए वं ध र्णो दे मो वि अ स ह्म दि स्सि हिं मो द ए हिं उ द रे मे प रि द ॥ अ सो च ॥ ए द प ड सु
अ जु अ लं क स्सा भ र्णो अ सा ॥ ता ज्ञा व द र्णि पि अ व अ स्सो पे रि व स्स ॥ इ ति प रि क म ति ॥ सु स ॥ इ द ती स ह सो प
स्सो ॥ अ ज्ञो व स त अ वि ह्म दा व तु मे मु दु ते अ वि ह्म ॥ इ द्वा क थं सु स ग दा ॥ सु स ग दे ए थ कि णि मि ते रो ई अ दि ॥
ए ह्म सा अ रि आ ए अ चो हि द किं वि सं वृ त्तं ॥ सु स ॥ ए द ए व रि वे द दु क मा ॥ सा ख त व स्सि णो दे वी ए उ अ इ ति पे
सि द ति प वा द क दु अ उ अ डि द अ ह्म र्णे ण अ णी अ दि क हि णो दे ति ॥ वि ह्म ॥ सो द ग ॥ हा भो दि सा रि ए हो अ सा
म स र्ण अ सो हे हा मि दु भा सि णि ॥ अ दि गि ध र्णो दा रिं दे वी ए क दे ॥ त दे ॥ सु स ॥ ए सा र अ ण मा ला ता ए जी वि द र्णि रा
सा ए अ ज्ञो व स त अ स्स ह्म प ड वा दे सु ति भ र्णि अ म म ह स्सो स म पि दा ॥ ता रं गे ए द अ ज्ञो ए द ॥ वि ह्म सा स ॥ स क
रु ली के सो पि धा प ॥ भो दि ण मे ई दि से प स्था वे ए द गे रि ह्म दु हे थो प स र दि तु भो ह द त ॥ सु स ॥ अ न ति व थ्या ॥ ता ए व
अ ण ग ए क रं तो अ गी के र दु ए द अ ज्ञो ॥ वि ह्म ॥ वि वि स अ ह्म वा उ व र्णे हि ते ए द मा ए ए व सा अ रि आ वि र ड कं
ठि द पि अ व अ स्सो य णो दे मि ॥ सु स ॥ व स त क थं ह स्सो र त मा लो द दा ता वि ह्म ॥ ए ही लो ह्म नि वृ त्त य न स वि स्म
य ॥ भो दि कु दे उ ए ए दि स स्स अ ले क र स्स आ ग मो ॥ सु स ॥ अ ज्ञो म ए वि को द ह्म र्णे ण सा पु दा पु थं अ सी वि ह्म ॥ त दे ता ए
किं भ र्णि द ॥ सु स ॥ त दे सा उ द्ध वे रि व अ दो हे ण स्स सि अ लु स ग दे किं दा रिं न व र्णो ए क था ए ति भ र्णि अ रो इ दु प ठे ना वि ह्म ॥

राम
१३

लोकां देवतामसु दुःखहेतुमिणपरिच्छेदसु धामनिजलसु दुःखल्लोका एता एते रवे सुसंगदीप अवशरसो
 दाहिकेति सुसुतः ॥ अजसो सुभद्रा देवी भाणा दोहिकृमि अफडि असितामेडवेगदोतो गे छदु अजो ॥ अहं जिदेवी एया
 समेदत्रा एपायारिणी भावित्ता इति निज्जातो ॥ प्रवेशक ॥ ततः प्रविशत्यासेन स्या राजा ॥ विवेक ॥ स्या जैः शपथैः प्रियेण
 नयसाविता तु वसापि केवलस्येण परेण पादपतने कीक्यैः सखी नोपुर ॥ प्रत्यासनिमुपागतो न हतथा देवी रुदं सायधाप्र
 क्षा न्ययतये ववाप्यसलिलैः कोपोपनीतः स्या ॥ ५ ॥ लोकं ठ निःस्य स्या तवेदिता नीदे व्यो प्रसादिता या सागरिका विने
 प्रकेव नैमां वाधते ॥ कुतः ॥ अमो जगर्भ सुकुमार तनु स्या लोकं ठ ग्रहे प्रथम राग धने विनीय ॥ सद्यः पतनं दनमार्ग एरं भ
 मा जैम न्ये मम क्षिपत माह्य प्रविष्ट ॥ २ ॥ विवित्य कोपिने विज्जामस्या नेवसेन कः सापदे व्यासेयते ॥ तत्कस्यागतो वाध
 नोस्तं करिष्ये ॥ इति निःस्य सति ॥ तः प्रविशति ये सतं कः ॥ वसंत कः ॥ परिक्लम्या वतो कः ॥ सविस्मयो ॥ एतो खुपि अ
 व अस्तो एरं तं रुक्मं ठ परियामे पिसला हणि जंत ए स सुधु रं हं तो उदिदो दुइ आवं दो वि अ अदि आदं सो हादि ॥ तां
 व ए उ व स प्या मि ॥ उपस्य ॥ सो त्यि भवे ॥ मो र्दु अ न ठु से दे वी ह स्या ग दे ला वि म ए पु लो वि ए दो हं अ धी हि जे दि द्रो सि ॥
 राजा ॥ दृष्टा स र्प ॥ कथं वसेन कः प्राप्नः ॥ सखे पा र्थ ज स्व मा ॥ विदुः ॥ परिच्छेद जति ॥ राजा ॥ वेवेणे वनि वेदिन स्य पाद व्या पुता
 दः ॥ तत्कथ्यता मि दनी सागरिका याः किं वर्तत इति ॥ विदुषः कः ॥ सवैतं तम धो मुख स्ति ए ति ॥ राजा ॥ वयस्य किं न कथयसि
 विदुः ॥ अपि अति ए वेदि दुंदेण पारं मि ॥ राजा ॥ सो दं गं ससं भ्रमे ॥ वयस्य कथमा प्रिय ॥ किं च क्रमे वो सष्टं ती विनंतया ॥ हा प्रिय
 सा गार के इति मोहं नो दयति ॥ विदुः ॥ स सं भ्रमे ॥ समस्स दु स मस्स दु पि अव अस्तो ॥ राजा ॥ समा अस्त्य सा से ॥ प्राणाः परित्यजते
 काम म द क्षि ए मो हे द क्षिणा भवे ते म द ये नं कुरु थ ॥ शो धु न पात य दितं मु पि ता स्य न नं या तं मु इरा म धु ना ग ज गामि नो सा ॥ ३ ॥
 विदुः ॥ भो मा अस्त्यो से भा वे हि ॥ सा खु दे वी ए उ ज्जं दणि पो सि दे नि मुणी अदि अ दो म ए अ पि अं नि भणि दं ॥ राजा ॥ कथमुज्जं
 पि तो प्रेषिता ॥ अहं निरतु रा धो म पि दे वी ॥ वयस्य केने ते वे त द र स्या तं ॥ विदुः ॥ नो सुसंग द ए ॥ अहं च म म ह स्य ना ए केणा वि
 के ज्जं ए इ अ चर अण मा ला पे सि द ॥ राजा ॥ किम परं म मा म्वा सो पि तु ॥ तदयस्य उपनय ॥ विदुः ॥ उपनयति ॥ राजा ॥ गरी ला रत्न मा

९६

१५

राम
१६

लोनिर्बर्णहृदयेदराति॥ अहह॥ केणस्वेपेसमासायतस्याः प्रभयानपा॥ तुल्यो वस्या सरयी वेयेततुग्यास्यतेमम॥ ४॥
वयस्य परिधत्तेनो॥ येन वयमेतामपि तावदधुः पतं करिष्यामः विदुः॥ जेभये आण वेदिनि॥ कंठपरिधत्तेनो॥ राजा॥ निध
स्य॥ वयस्य दुर्लभं दर्शने पुनः प्रियाया॥ यद॥ केणोपि ध्यायः समये॥ मोमा एतु उरस्य उद्यमेतेहि॥ कदाविव को विरस्यसे चर
दि॥ नतः प्रविशति एतद् हस्तं वसुधरा॥ वसु॥ उपस्यस्य॥ जयदुः २ भदु॥ भदु एता एतु रुमला दोनाइले॥ विजय वमनापि श्री
वेद दुका मोदु आरे चिह्नाइ॥ राजा॥ वसुधरे अविलंबिते प्रवेशय॥ वसु॥ जे देवो आण वेदिनि निःक्रम्य॥ विजय वर्मणा स
ह पुनः प्रविश्य व॥ विजय वनन॥ एतो खुभदुता उपस्य दुः अः शोली॥ विजय वर्मणा उपस्य स॥ जयदुः २ देव॥ देव दिष्टा वसु
रुम एव तो विजयेन॥ राजा॥ सा पुं रुम एव न सा पुं अविरा न्म हस्तयो ज न मनुष्टिनी विजय वर्मन तत्कथप कथामति विस्तृतः॥
श्रोतुमिच्छामि॥ विजय देव प्रयतो॥ इतो देवा देवा कृति पयैरेवा हो भिरने क करि नुरग पति दुर्निबोरेण महता वल स मृहेन
गत्या रुम एवा न विधुर्गु वस्थितस्य को सलपतेः हरि मय प्रभ्य समो वा सयितुं मारध्व ना न॥ राजा॥ न तस्त ते॥ विजय॥ तेनः
को सलने प्रतोपि अतिरपडिम एव सारिभ व म स ह मा नो हास्ति कथाय म शेष मा स सैन्ये सः श्री कृतया न॥ विदुः॥ मोलहु आ वर
रस्य॥ वेवे वादि मोहि अः अः॥ राजा॥ न तस्त न॥ विजय॥ देवा पोडु निगी स्या विध्या द भ य द भि मु ख स्त क्ष णं दिग्बि भा गो न विधे
नेवा परेणादुपपत्तिपेन ना॥ पीड वं येन रुंधन॥ वेगा ह्येण न्यमुं च न य सम द ग जो सिष्ट पति निर्धय स प्रसाया द्धिष्ठता नि
द्विगुणित रभ स स्त रुम एवा न क्षणेन॥ ५॥ अपि च॥ अस्तव्य स्त निरस्त शस्त्र कर्षणे कुतो त्र मा गे ध रं मृदा स्त क सारिनि
स्वन स ह र ए व म हि म ह्नि॥ आहूया जितु खे स को सल पति भग्नि प्रधा ने वे लो॥ राजा॥ कथमस्मदीया न्येपि वलानि न
गानि॥ विजय॥ एकेने व रु न एव तो शर शते म त्ति द्वि प स्या ह न॥ ५॥ विदुः॥ जे दुः २ भये॥ जे देवो अहे हिं॥ इति न सति॥ राजा॥ सी
धु को सल पते सा पुः मृत्युरपि नो स्ता ध्यः॥ यस्यापि कोपि पुर कार मे वे व री ये नि॥ न तस्त न॥ विजय॥ रुम एवा न पिको स ले पुम
द्वान रं ज्ञा पो सं जय व र्मा णं स्या प धि ला प्र हार प्र णित हा स्ति क प्रा प म शो ष से न्य म नु व र्त मा न श नै श नै रा ग त ए व॥ राजा॥ वसु
धरे उ अतो यो गे ध रा प रः॥ प्रदश्येता मे त्र सा द स्या य म वे द नि॥ वसु॥ जे देवो आण वेदिनि विजय वर्मणा सह निष्क्रान्ता॥ ततः प्रवि

शक्ति का वन माला ॥ को वन ॥ आण त्रीं देवी ए ज हज स हं जे के व ए माली ए दं दं द नालि अं अज्ज उ तर स दं से दि ॥ इति म
 रि क म्प व लो क्प य ॥ ए सो खु भ द्वा ॥ ता ज व ल उ व स प्प मि ॥ उ प स त्थ ॥ जे दु र भ द्वा ॥ भ द्वा दे वी वि ल्प वे दि ॥ ए सो खु उ र
 पि ली दो स च र सि दि ए म दं द नालि अं आ अ द ॥ ता वे स व दु ए भ द्वा ॥ रा ज ॥ अ लि न ॥ को न क मे द नालि के ॥ त न
 शी प्रं प्र वे श य ॥ को च ण मा ॥ जे भ द्वा आ ण वे दि त्ति नि ॥ क म्प ॥ पि व का ह ले ने द नालि के न स ह प्र वि श नि ॥ वे दी ॥ ए दु र अ ज्ज ॥
 ए द नालि क ॥ परि क म ति ॥ वे दी ॥ ए सो भ द्वा ता उ व स प्प दु अ ज्ज ॥ ए द ॥ उ प स त्थ ॥ ज प दु र भ द्वा ॥ पि ष्ठि को अ म द्वा व द्
 धं ह स्य धं ल्प ण म ह र द स व र णो हि ॥ इ ए आ लि अ पि ल द्वा म स स ॥ त ह जे व अ ज्ज स व र स ॥ वि व र स सु परि ष्ठि द जे स स
 दे व किं च र णो ए ति अ को आ आ से म हि अ र ज ले ज ले णो मे ज्ज ए म हि य ॥ सो दा वि ज्ज ॥ दे हि आ ण ति ॥ वि द्वा ॥ मा व अ स
 अ व हि दो हो हि ॥ भो इ दि सा से अ व द्वा नो जे ए ए व स मी वी अ दि ॥ ए द ॥ दे व ॥ किं ज प्पि दे ण व द्वा नो भ दि अ प ण म द्वा स द्वा ॥
 ते ते द वे मि अ ह ए उ र णो मे त प्प ह वे ण ॥ रा ज ॥ भ द्वा उ अ तो दे वि ॥ यु प्प दी य ए वा य मे द नालि क ॥ वि ज नी रु ने आ य रु द्वा ॥
 त द ग ष स हि ता वे वे न प श्या म ॥ वे दी ॥ जे भ द्वा आ ण वे दि त्ति नि ॥ क म्प ॥ वा स व द नो पा स ह प्र वि श नि ॥ वा स व ॥ क व ता माले
 उ ज्ज इ ली ति आ अ द ति अ पि मे ता स इ द नालि ए स व वा द ॥ को च ॥ ए हि उ ल व द्वा मा णो खु ए सो दे वी ए ॥ व स ॥ उ प वि श नि ॥
 वा स ॥ उ प स त्थ ॥ जे दु र अ ज्ज उ तो ॥ रा ज ॥ दे वि व द्वा ने न ग र्जि त त दि ह स्यो वे वे न प श्या म ॥ वा स ॥ उ प वि श नि ॥ रा ज ॥ भ द्वा ॥
 प्र स त्प ता व द्वा वि ध मि द्वा ॥ ए द ॥ जे दे वो आ ण वे दि त्ति व द्वा वि ध नो घ रू लो पि ष्ठि को अ म द्वा ॥ हरि हर व रा ह प्प म द्वा दे वी
 रा वे मि दे व रा अ अ ॥ गे अ ण मि सि दि वि ज्ज ह र व द्वा स त्थ वे ण व न ॥ १ ॥ स व स व स य प श्प ति ॥ रा ज ॥ उ र्व द्वा आ से ना
 द व त र न्ना अ र्य मा अ र्य ॥ वि द्वा ॥ अ ध रि अ र ॥ वा स ॥ अ ध रि अ र ॥ रा ज दे वी प श्प ॥ ए ध व र्णा स रो जे र द्वा नि के र के लो शो ख र श
 क रा य दो र्ज दे स्या त को सो स व नु र सि ग द च क चि द्वा नु र्भि ॥ ए सो प्पे ए व त स्य ॥ सि द्वा प ति र मी दे वि दे वा स्त य न्ने अ य
 यो ॥ न ये ता अ न्ने च र ण च ण च ण न्ने पु रा दि य ना यो ॥ ७ ॥ वा स ॥ अ ध रि अ र ॥ वि द्वा ॥ अ प वा य ॥ दा सो ए उ त द्वा द आ लि अ दि
 वे दि अ ध रा हि व द सि द्वा ॥ जे द दि म णा परि नु द्वा ए क क ता दे स हि सा अ रि अ ॥ त व ॥ अ नि श नि व सु ध रा ॥ व सु ॥ ए दु र भ द्वा ॥ अ

१५

15

राम
१५

मचे तो अंधरा अणो बिसावोदा ॥ एलो खुबिक सवा दुणा कं बुझणा सह अणु प्ये सि दो वसु भूदा ॥ ता एदं अरु हदि दे वो इम सिं
एव सुंदर मुहु व ए पे रि व डु ॥ अरु पिक जस स स मा पि अ अ अरु जे वो ॥ वास ॥ अरु उ ते चि ह दे व पे र व री ॥ अ अ मा उरु
ना दो अरु पाणा अम बु व सु मा द आ अरु ॥ ता एदं व पे र व डु अरु उ तो ॥ रा जा ॥ यथा ह दे वो ॥ एंड ता ल कं प्रति भद्र ॥
विम्र म्य ता मि द नी ॥ एंड ता ल कं पु न पि पि के भ्र म य ति ॥ जे दे वो आ रा ये दि त्ति नि ॥ क्राम न ॥ ए धो उ ला खे ड उ अ व स ए
व दे वे र प रि व डो ॥ रा जा ॥ भद्र इक्ष म ॥ वास ॥ कं व ए मा ले दे हि से प रि तो सि अ ॥ वे डो ॥ जे दे वो आ रा ये दि त्ति ॥ एंड ता ल कं
व स ह नि ॥ को ता ॥ रा जा ॥ व स न क ॥ प्र सु इ म्प प्र वे य ता ॥ व सु भू ति ॥ वि ड ॥ जे म रु आ रा ये दि त्ति नि ॥ क्राम न ॥ त त ॥ प्र वि श ति व
स त के न स ह य सु भू ति ॥ वा भ्र य अ ॥ वि ड ॥ ए डु र ॥ प्र म थो ॥ व सु भू ति ॥ स म तो द व लो क्य व स ए र स्य भ व न र मा स ॥ इ ह हि ॥
आ दि तो ज प के ज रे ण तु र गो न्ति य र्म पि न व ह न मा ने स गी त ध्व नि ना ह न ॥ क्षि ति भ र तो गो षो पु ति षु न क्ष ण ॥ स चो वि स्म त
सिं ह ले इ वि भ व ॥ क शो प्र द शो षो ॥ इ अ ने व कु द ह ले न म ह ना ग्रा न्ति यथा ह कृत ॥ ८ ॥ अ ध य लु चि रा स्था मि न ड
स्वामी ति य ले स मा ने दा त श म ने कि म प्य व स्था त र म नु म य मि ॥ कु ते ॥ वि र डि कं प स्य प्र थ य ति त रा सा ध स व शा द वि स्य सु
वि ति र य ति पु ने र्वा ष्य स ल ले ॥ स्य व ले द री वा री ज ड प ति ते रा ग र द ते पा ज रा या ॥ सा हा य्य म मा हि प रि तो षो ध कु र ते ॥ ९ ॥ वि ड ॥
अ मे भू ला ए डु र ॥ अ म थो ॥ व सु ॥ वि ड ॥ क स्य कं ड र न मा लो द ड ॥ अ प वा यी वा भ्र ये जी ने से वे पे र ले मा लो ॥ प दे वे ने रा ज पु
अ प्र स्था ने स म ये द ने ति ॥ वा भ्र य ॥ अ मा ल्य अ मि सा द ड ॥ त लिं व स सं ने का द वे ग श मि प्र म व म स्यो ॥ व सु ॥ वा भ्र य मा मे
वो म ह ति रा ज कु ले र ले वो ड ॥ नो ड ॥ नो मो भ र णा ना स वा द ॥ इ ति प रि क्राम ने ॥ वि ड ॥ रा जा न मु द श्य ॥ ए सो वं श हि धो तो उ
व स प्य ॥ अ म थो ॥ व सु ॥ उप र स्य ॥ जे ड र दे व ॥ रा जा ॥ उ धा य अ मि वो द ये ॥ व सु ॥ आ न भ यो ॥ रा जा ॥ अ स न मा ने न मा र्थी य ॥ वि ड ॥
भा ए द मी से ने उ प वि श ड ॥ अ म थो ॥ व सु ॥ उ पा व श ति ॥ कं चु की ॥ दे व वा भ्र य ॥ प्र ण म ति ॥ रा जा ॥ ए डु ह ले द ता ॥ वा भ्र य इ त आ स
तो ॥ कं चु की उ प वि श ति ॥ वि ड ॥ क ॥ अ म थ ए सा दे वी वा स व द ता ण म दि ॥ वा स ॥ अ र्जो प र ण मा मि ॥ व सु ॥ आ उ भि ती व स रा
ज स र शो पु ने मा पु रि ॥ कं चु की ॥ र वि वा भ्र य ॥ प्र ण म ति ॥ रा जा ॥ आ र्य व सु भू ते अ पि क श ले त न भ व ता सि ह ले श्व र स्य ॥ व सु ॥ उ

धर्मवलो कपनिश्चयवदेवनजानी के निरापय मिमं द भाग्यः॥ अजो मुखस्तिष्ठति॥ वाससविषादमासगर्भं॥ हृत्पुंसि
 लिङ्गसुभ्रुं कथं दस्तं॥ राजा॥ वसुधैव कुटुम्बकम्॥ वासः॥ अपवायं विरमपि स्थितो यत्कथनी
 येनाददातीति वक्तव्यता॥ वसु॥ सास्त्रं देवनरी कानि वेदयितुं॥ तथाप्येककथयामि मिमं द भाग्यः॥ यासो तत्र भवनं
 ह्येव रस्य दुहितारत्ना वली नामा पुष्पती सिद्धदेशे नादिष्टा॥ गोत्वाः पाणिग्रहणं करिष्याति स सा वं भौमो रामो
 प्रविष्यति तत्प्रत्यपाद्यो गंधरायणेन बहुशः प्रार्थ्यमाना सिद्धं ज्ञेयं वासवदत्तायाश्चित्रं खेदपरिहरतानंद
 ता॥ राजा॥ अपवायं देविकि मिमं द नीमली कंसदीपना तुला मासकं धपति॥ वासः॥ विमृश्य अज्जुतत्र अहप
 ण आणाति॥ को लप अलि अमे नो द विहू॥ ता ए कंसं वुर्त॥ वसु॥ ततो देवी दग्धेति वार्ता मुत्पाद्य देवाय प्रतिपादय
 तुं मानो यमाना समुद्रयान भंगादि त हृदने जो मुखस्तिष्ठति॥ वासः॥ सास्त्रं॥ हृत्पुंसि मिमं द भाग्यिणी॥ सर्वाणि एव
 अणवलि कदि दशिं सि॥ देहि मे पडि वे अण॥ राजा॥ समाश्वासहि दुःखं गृहगति देवस्य॥ वाहनं गयते नो अ
 तो न चैतावेव निदर्शनीमिति वसुधैव मिवाभ्यो दर्शयान॥ वासः॥ अज्जुतत्र दुर्जरिदं वृषट्कुतो मम शत्रे अं भा अये अ
 ने पथ्ये म हान् कलं कलं॥ हृष्या लो मष्टं गप्रियमि वनि चयै रविषामा दधानः सां श्रे घान इमा गस्त्रय न पिभुनि
 ता स्येन ती व्रजतापः॥ कुर्वन् क्रोडा मही ध्रंस जलं जल धार श्याम लं धूमपात्रे एष लो धार्त धो विजु न इह स रसे जो सि
 तो तः पुरे गिः॥ ॥ अवि य॥ देवी दग्धे कदर्यं पो भू स्त्रयण के पुरा॥ कोरष्यन्ति वनं सत्यं मय मग्निः समुत्थितः॥ राजा॥
 कथं देवी वासवदत्ता दग्धा॥ हृषिये वासवदत्ते॥ वासः॥ अज्जुतत्र परिता हि र राजा॥ अये कथमिति स भ्रमा सो अर्थ स्थापि
 देवी नो पले सिता॥ देव्याः पाणिग्रहीत्वा आलिङ्ग्य देविसमाश्वासि हि र वासः॥ अज्जुतत्र मम ए अत्र लो कि देण भग्नि द॥ ए
 स अदि आ वि वज्रपि॥ न प ग्ना अदु अज्जुतत्रो॥ राजा॥ कथं देवी सागरिक विपथिते॥ एष गच्छामि वसुधैव मिः॥ देव कि मि द
 म कारण एव पने गतिः क्रियते॥ वाभ॥ देव दुर्भगा वसुधैव मिः विहू॥ राजा न मु त्ते री ये ग्ही लो॥ भो भार्यु सा हस करो सि॥

१६

राजा उच्यते यमाकर्षणम् ॥ अरेचिच्छस्वसागरिका विपद्यते ॥ किमपि प्राणाः परिरक्ष्यते ॥ वाभ्रव्यः ॥ किमिदमवक्तु
 निभरतकुशलसंशयमुत्पासरोप्यते ॥ प्रथवा किमानीयः ॥ न केन दृशकरामि ॥ राजा ॥ धर्माभिन्नं न दद्यात् ॥
 विरमविरमवद्विमुच्यमाना कुले प्रकटयसि किमुच्यते ॥ विष्णोचक्रवालो विरहदुतमुत्तीह्यो न दग्धः प्रियायाः प्रल
 यदहनभासा तस्य किं कुरुषि ॥ १२ ॥ कथमासन्नदुतं न ह्यनर्तते सागरिका ॥ तत्पारितमेनासभावयामि ॥ वासक
 थं ममेदुःखकारिणी एव ॥ अगादे एव वसिष्ठः ॥ अज्ञोऽतः ॥ तो अहं पि अज्ञोऽतः ॥ अणुगमिस्स ॥ विदुः ॥ पारिक्राम
 ने ॥ अग्रतो भूत्वा ॥ मोदि अहं पि पुनो वदस्व को ह्यमि ॥ वसुभरतिः ॥ कथं प्रविष्ट एव स्वलनं वदस्व राजा ॥ मे मोपि दृष्ट राज
 पुत्री विपत्ते दुःखमिह वात्माने नो दुतौ कर्तुः ॥ कंथुकी ॥ सास्त्रे ॥ ह्यमिहा राज्ञी किमिदमकारणमेव भरतकुलं संशयमुत्पा
 मा रोपितं ॥ अथ वा किं प्रेतापेनो ह्यमपि भक्तिस्तदृशमाह्वयामि ॥ इति सर्वं अग्निप्रज्ञा नो दद्यात् ॥ नेते प्रविशति निग
 डसेयता सागरिका ॥ सागा ॥ हृदि ॥ आः समं न दोषं जलितो हृदयहः ॥ अज्ञोऽहं स्वहृदि किं आकारस्सिदिमदुःखाय सागा
 राजा ॥ अवेदयमासन्नदुतं वदस्व सागरिका यत्तते ॥ तदुपसर्पयामि ॥ तत्पारितमेनासभावयामि ॥ अविप्रिये
 किमपि मध्यस्थतया वर्तते ॥ सागा ॥ राजानं दृष्ट्वा आसेगतं ॥ कथं अज्ञोऽतः ॥ तो अहं पि अणुगमिस्स ॥ विदुः ॥ पारिक्राम
 प्रकाशः ॥ ससंभ्रमे ॥ दृष्ट्वा पारिजातं राजा ॥ भीरुः ॥ अनेनैव स्वलु सस्यतो वदस्व एव भरोऽहम् ॥ अग्रतो वलोक्य हाहा धि
 गिदमं शुभं ज्योतिरिति स्नानप्रच्युते ॥ विलोक्य मुहुस्येव लसि ॥ अवेतोऽहम् ॥ कथं निगडसेयता सिद्धुतं न्रयामि न वती मेह
 प्रियतमे वलं न स्वमा ॥ १३ ॥ कंठे गृहीत्वा निमोक्षिता क्षस्य श्चिखना दयम् ॥ अहो क्षणादपगतो येनेत्येतापः ॥ मि
 येसमाश्रयसिद्धिं ॥ अर्कं लग्नोऽपि भवती न भूक्ष्यति हुताशनः ॥ यतः सतापमेवायं स्पर्शस्ते हरति प्रिये ॥ १४ ॥ अ
 क्षिणी समुन्मील्य ॥ नरीक्ष्यवा ॥ अहो मदाश्रयं ॥ कासो गतो दुतं बहलदवस्थमेव न दत्तः पुरः ॥ वासवदत्तो दृष्ट्वा ॥
 कथमवेति नृपालतेये ॥ वास ॥ राज्ञः शरीरं प्रदग्धः सहर्षः ॥ दिङ्मात्रं रवदशरीरो अज्ञोऽतः ॥ राजा ॥ वाभ्रव्यः ॥
 वाभ्रव्यः ॥ विज्ञायतामहं राजा ॥ देवदृष्ट्या बद्धः ॥ पुनरुद्धुसिता स्मः ॥ राजा ॥ वसुभरतिरयं ॥ न सुभरति ॥ देवदृष्ट्या वेदुः ॥

राम १६

राजा ॥ अथ विदुः ॥ जे दुःख वं ॥ राजा ॥ विचिंत्य स विनर्क ॥ स्वप्ने प्रति भवेति किं विदुः ॥ जे जाले विदुः ॥ मो मास देह करे ॥
 देह ॥ जे सुख ॥ भविष्यते ते लोकासी एउ ते लोके ॥ अलि एण जे ॥ अवेस्य एउ देव एण एको मेखे ॥ उ ॥ देह ॥ जो नो ते जे
 देह ॥ राजा ॥ देवि ॥ इयमेवमाभिरुचीता ॥ खेद ॥ य नो लो गोरिका ॥ वास ॥ विदुः ॥ अजित ते जालि देह सव ॥ वसु ॥ साग
 रि को दृष्टा ॥ अपवार्य ॥ वाभ ॥ य स दृष्टी ये राजपुत्रा ॥ वाभ ॥ यः अमात्स्य ॥ ममा ॥ येन देवनेन सिव तैते ॥ वसु ॥ राजान मुदिष्ट ॥
 कुत इवे के य का ॥ राजा ॥ देवी जानाति ॥ वसु ॥ देवी कुत ॥ पुनरिप के य का ॥ वास ॥ अमघ एसा खुसा ॥ अरु पावि दानि भणि ॥ अ
 मघ जो ॥ अधरा ॥ अलो न मम हस्ये एरि सिवा ॥ अरु एवसा ॥ अरि एते सदा ॥ वा ॥ अदि ॥ राजा ॥ स्वगत ॥ कथं योगे धरा
 पणे न न्यस्ता ॥ कथमसौ ममानि ये प किं चित् करिष्यति ॥ वसु ॥ अपवार्य ॥ वाभ ॥ य यथा सुस दृष्टी वसेन कस्य के देह ॥ मे
 लो ॥ अस्या ॥ अपि सागरा स्नाति ॥ तथा ॥ य क्रु सिं ह ले ॥ रस्य दुहि नार लाव नी ति ॥ उपसृत्य ॥ आयुष्मनि रत्ना वलित्व मे
 तावती मवस्था गता सि ॥ दृष्टा सा स्ते ॥ कथममघो वसु ॥ राजा ॥ वसु ॥ हति ॥ हा नो स्मि मं दना ॥ ग्य दनि भू मो पतति ॥ साग
 हा हं हि मे द मा इली ॥ हा नो द ह ॥ अव कहि सि देहि पाउ ये ॥ अलो ॥ इत्यो लो न पोत यति ॥ इति मो ह मुप गतो ॥ वा स व दना ॥ स
 सन्न मे ॥ के पु इ इ ये सा मने वेहि ए ॥ अर ॥ अलो वली ॥ के पु की ॥ देवि ॥ इयमेवसा ॥ वासा ॥ रत्ना वली नो लि ॥ अय ॥ वाहि रि स म स
 स ॥ राजा ॥ कथमुदा ने ये श प्रभवस्य वि क म वा हो रा त जे ये ॥ विदुः ॥ स्वगत ॥ वासा ॥ रत्ना वली नो लि ॥ अय ॥ वाहि रि स म स
 इ सा मे खे जे ए र स इ इ स्ता पिरि छ दो दि नि ॥ वासा ॥ उ त्या ये ॥ राते पु त्रि स मा ॥ अ सि सि ॥ न न्यि ये ॥ यी य सी ॥ भोगे नो ॥ इ ॥ स्व मा से ॥
 त स रि द न स्ते नो ॥ रत्ना वली स मा ॥ अ सु स ॥ राजा ॥ ने ति र्ग य व नी क्य ॥ स्वगत ॥ कदा वेरा धा खु ॥ अहं देवी एण स के एण मि मु
 दे सि दु ॥ इत्यु जो नु र्वा मि ष्ठ ति ॥ वासा ॥ सा स्ते ॥ वाहि प्रसा ये ए हि ॥ अदि सि ॥ दुरे सो दा र्ता पि ॥ अवा हि रि ए सि ले हं दे सो हि नि कं दे
 एहि मि ॥ रत्ना वली ॥ स्व लि ते ना ट य ति ॥ वासा ॥ अपवार्य ॥ अजित ते ल ॥ जे नि अ हं इ मि एण ॥ अत एण रि स से त ले लो ॥ ता नो
 अय तो हि स ए दे ये ॥ राजा ॥ स प रि तो ये ॥ य पा ह दे वी ॥ तथा करो ति ॥ वासा ॥ अमघ जो ॥ अधरा ॥ अलो ए र ति ॥ अ को ले दु जे
 ए को द ॥ जे ए जे ए ते ए वि ए मे रि वे दि ॥ तनः ॥ प्रवि शति योगे धरा पण ॥ योगे ॥ देव्या मघ ॥ य नो त्या मुप गने ॥ प्रसु वि
 योग स्त ॥ सा दे व स्य क ले र ता घ ट ने पा दुः खे म पा स्या पि ता ॥ त स्या श्री नि म ये कार धा ति ॥ ग त्वा मि त्या नो भः ॥ प्र मो स्ये
 दर्श पि तु त या पि व द ने श क्रो मि नो ल ॥ अ य ॥ १५ ॥ अथ वा किं क्रियते ॥ इ द रा म ल्य त मा ने नी य धा पि नि रे नु वे धा ति स्वा मि

५७

17

राम
५७

नाकं प्रभुं निरुप्य ॥ अयं देवो मत्सराजः ॥ प्रावदुपसर्पिता ॥ उपस्थस्य जंघदुर्देवः ॥ क्षम्यतो यन्मया अनिवेधकृतं ।
 राज्ञो ॥ केषुपकिमनिवेधकृतं ॥ यो गं ॥ करोत्यासनपरिग्रहदेवः ॥ सर्वविज्ञापयामि सर्वं उपविशानि ॥ योगः ॥ देवः
 यतो येयसि ह लेभ्यस्स्य दुहिता सा सिद्धिं नो दिष्टा ॥ यथा यो म्याः पाणिग्रहणं कुर्यात्तिसत्सर्वं भो मारातामविधमि ॥
 ततस्तत्प्रत्येयादस्मानिः स्थाभि नो र्वे बहुशः प्रार्थ्यमानेनापि सिद्धिं लेभ्यस्स्य देव्या वा स वदतायाश्च त्रैखंदपरिह
 रता यदा न दत्ता ॥ राज्ञो ॥ तदा किं ॥ प्रो गं ॥ तदा लो वरिण के न देवी दग्धेति प्रसिद्धिमुत्पाद्यते दंति कं वा भव्योपि प्र
 दितः ॥ राज्ञो यो गंधरायणः ॥ अतः परं कृतं मेव मया ॥ यथा देवी ह स्तो किमप्यनुचि सस्यापिता ॥ विदुषः ॥ अथ वा पा
 नो र्दस्स श्रीमप्या ॥ मे एतां लिहा ॥ अणा वरिण दे एदं तो री ॥ आदि एव ॥ अहं अते उता द एदं तो री ॥ अत उररा हो
 देवो सुदे एदं सिद्धिं दिति ॥ राज्ञो ॥ गृही तस्ते यो गंधरायणो मित्रा यो वसेते के न ॥ यो गं ॥ यदा शोपयति देवः ॥ एदं
 लि रता नोपि मन्ये त्वं योग एव ॥ यो गं ॥ अन्पथा अंतः पुरे वदुया अस्याः कुतो देवे न दर्शनं ॥ अदृष्टा याश्च व
 सुभूतिना कुते परिशो न ॥ राज्ञो ॥ विहस्या ॥ परिशता याश्च भगिन्याः सप्रतियथा करणी येते न देवी प्रमारी ॥ वास
 अजो उत पुडश्वा ने ए भणासि ॥ जहपाडि ना देह मेरुः अगगमालेति ॥ विदुः ॥ भो दि सुहु तु एतां लिहा ॥ अमद्वे स्स श्रीमप्या
 ॥ वासा एहिर अणा वने एहा ॥ दाणि पि देवो हि रिण आ पुरु र्व हो दु ॥ रत्न वली स्वकी ये राम रणे रत्न करोति ॥
 अर्त्तकृत्य ह स्ते गृहीत्वा ॥ राज्ञो ननुपसर्पिता ॥ उपस्थस्य अजो उत एदं अणा वलि पाडि ॥ राज्ञो ॥ सहर्ष ह स्तो प्रसा
 य ॥ कदे म्याः प्रसादो न वदुमन्यत इति ॥ सागरिका रत्ना नि ॥ वास ॥ अजो उत दुरे एदं एतां लिहा ॥ तत हर के
 सुजहवे पुजं रा सुमरेदि ॥ इति समर्पयति ॥ राज्ञो ॥ यथा शोपयति देवी ॥ विदुः ॥ सहर्ष नेत्याति ॥ ही ही भोजं यदुभवे
 पुरवी खुदाणि ह लेगदापि अब अस्स स्स ॥ वसु ॥ राजपुनि वा स वदुता प्रणामे नो र्वया रत्नावली तथा करोति ॥ वसु ॥ दे
 वी स्या ने देवी शदमुहसि ॥ वास ॥ रत्नावली मालिग्य देवी शदवी शद्वे न प्रसादमकं रोदिति ॥ राज्ञो ॥ किमते परमोप
 प्रियमस्ति ॥ यतः ॥ नीतो विक्रम वादुरा त्समतो मस्तो पुमुर्वा भिले मारे सागरिका ममेव उवन प्राश्ये बहे ठ प्रिया ॥ देवी
 प्रीतिमुपागता व भगिनी ॥ ना भ्राजिताः को रत्ना ॥ किं नामो स्तो विप्रमत्रमुने पश्चिं करोमि स्स हा ॥ तथा पादमस्तु भर
 त्वो क्य ॥ देवी मुद्गमसस्या जनयतु विस्तृतं वासवो शोभिष्टा मिष्टे स्ते विष्टा नो विष्टतु विष्टिवत्प्रीण न विष्टमुत्प्या ॥
 आकल्पाने चारुया समुपचितसुखः स्तंगमः सज्जो नो नो निः शयाः को तु शाति पिष्ठ न जे न गि सहुर्ज या वग्ने लेपा ॥
 इति निश्रान्ताः सवै चतुर्थे किं ॥ ॥ इति श्री हर्ष देव कृता रत्नावली समाप्ता ॥ ॥